13. Nam Manjari by Nand Dass and Bhakha Bhukhan Raja Jaswant Singh written by Inder Sain Bik. 1823 - 1770 A.D.

MSS Hindi 13
1402-MS.

1. Nam manjri by Nand Sawami
2. Bakha Bhukhan Raja Jaswant Singh.

writer by Inder Sain
Vik 1823 A.D. 1770
1402-MS.

22

Nam Manjri

श्री ग [illegible]

1402-MS

२

स्वस्ति श्री गणेशाय नमः ॥ अथ ना
म मंजरी स्वामी नंददास लिख्यते ॥ ॥
॥ दोहरा ॥ तं नमामि पद परम गुरु कृ
ष्ण कमल दल नैन ॥ जग कारन क
रुनारनव गोकुल जिन्हको अैन
॥१॥ नाम रूप गुण भेद करि सुइ प्र
गट सब ठौर ॥ ता विनु तत्व जु आ
न कछु कहै सु अति बड बौर ॥२॥ स
म्मझि सकत नहि संसकृत जान्यो
चाहत नाम ॥ तिन लगि नंद सुम
ज पार चत नाम की दाम ॥३॥ गुंथ
न नाना नाम कौं अमर कोश के भा
इ ॥ मानवती के मान पर मिलहिं अ
र्थ सब आइ ॥४॥ निज मूरति पिय इ
ग नि मै निरखत सहज सुभाइ ॥ मा
उपजो मान हिय आनतीय कै भ
॥५॥ इति नाम ॥ वेकुब स उरमाग्व

षि आपनी आइ॥ मान वढ्यो अति हि
ये मैं आननीय कैभाइ॥८॥ मान ना
म॥ स्म वदर्प हंकार मद गर्व स्मय
अभिमान॥ मान राधिका कुंवरि को
सब कौं करा कल्यान॥७॥ सखी नाम॥
वयस्या सध्री वी सखी हितू सहचरी आ
हि॥ अली कुंवर नंदलाल की चली मx
ना वनिता हि॥८॥ बुद्धि नाम॥ बुद्धि
मनीषा सेमुषी मेधा धिषणा धि
य॥ मति सौं मतो करति चली भली वि
चक्षनताय॥९॥ सरस्वती नाम॥ वा
णी वाक सरस्वती इला सारदा नाम
चली मनावनि भारती वचन चातुरी
का म॥१०॥ लोभ नाम॥ आसा तृष्णा स
ह. मार्ग नहु लनूरन पुनि होइ॥ तृष्णा

॥२॥ तालि
त्वरतुरंछिप्रअरूलघपॅयॅरंहंससोई॥
॥११॥बाजेवेगजेवरभसरभअकोबलेवि
नतुनाल॥चपलचलीचातुरअली
आतुरदिषिनंदलाल॥१२॥धामना
म॥सदनसद्मआगारग्रहगेहवेस्म
संकेत॥धामहर्म्यपरआसपदआल
यनिलयनिकेत॥१३॥मंदिरमंडपआ
यतनवसतिनिकायस्थानि॥भवन
भूपछबभानकेगईसहवैजानि॥
॥१४॥कंचननाम॥कंचनअर्जुनका
र्निसुरहेमहिरन्यसुवर्न॥अष्टापद
हाटकपुरटसानकुंभसुईस्वर्न॥१५
जातरूपकलधूतहरिचामीकरत
पनीय॥कनकरुद्ररेतनकनकमह
रजतरमनीय॥१६॥कुंदनकीवरभी
तिजहंमानिकगचछविदेत॥नहां

तहाँ नर नारि सब रुाइं मुकि मुकिले
त ॥१७॥ नृपे के नाम ॥ रूकमर जतं दुर
वर्न सुदू जा न नूप अज्जूर ॥ नृप की गो
साल जै ह भूप भवन ते दूर ॥१८॥ उज्ज्व
ल नाम ॥ सुक्ल सुभ्र पांडुर विसन अ
र्जुन।सित अवदात ॥ धवल नवल
दूं स्वी अराटाकरत घरा सौ वात ॥१९
॥ सोभा नाम ॥ भा अभा भा सो भा प्रभा
सुषमा परमा कौंति ॥ कृवि न कहि
परे भवन की सुर भूल ति दि षि भौ
ति ॥२०॥ किरन नाम ॥ अंसु गभस्ति
मयूष कर गो मरीचि वसु जोति ॥ र
स्मि पर सि सासि सूर की जगमगा नग
मगा होति ॥२१॥ मयूर नाम ॥ नीलकं
ठ केकी बराहि सिषी सिषंडी होइ ॥

॥३॥ अहिरकलापीअहिभषीसिवसुत
वाहनसोइ॥२२॥नाचतमोरअटान
परअतिहींभोरअनंद॥छिनछिन
जहँउनयोरहैं॥नवनीरदनंदनंद
॥२३॥सिंघनाम॥कंठीरवहरिकेस
रीपुंडरीकपुनिजक्ष॥मृगपतिहीपी
व्याघ्रमृदुपंचाननपलभक्ष॥२४॥
सिंहपोरिढेंगभानकीसहचरिपहुँची
जाइ॥अतिसंघटनरभट्टनिकोठा
ठीहीलजाइ॥२५॥अश्वनाम॥वाजि
वाहसिंधवतुरंगअर्वअश्वकिंकान॥
भीतुरंगमकीजहींलैकुनपैयेजान॥
२६॥हस्तीनाम॥हस्तीदंतीद्विरदद्विपप
द्मीवारणव्याल॥इभकुंजरकुंभीकरी
सांभेरभसुंडाल॥२७॥सिंधुरअनकप
नागहरिगजमामजमातँगा॥द्रुतगगं
दघूमतमोरंजितलानागंग॥२८॥[illegible]

सिद्धिके नाम ॥ अणिमा महिमा गरिम
मा लघिमा प्राप्ति प्रकाम ॥ वशीकरण
अरु ईसता अष्ट सिद्धिके नाम ॥ २९ ॥ अ
ष्ट सिद्धि ये कष्ट करि सिद्धि लहत संसा
र ॥ ते व्रजभान भुपालकैं द्वार बुहारन
हार ॥ ३० ॥ नवनिधिनाम ॥ वर्च पद्म म
हापद्म पुनि कच्छप मकर मुकुंद ॥ संख ये
अरु नील इक अरु इक कहियत
कुंद ॥ ३१ ॥ ये नव निधि द्विज गनन
धि विलैकाहु दीन ॥ तेया वल्लभ ग
ज वैपरत भिखारिनि भीख ॥ ३२ ॥ मोक्षना
म ॥ मोक्ष अमृत कैवल्य पुनि अपनि
र्भव अपवर्ग ॥ निश्रेयस निर्वाण सुभ
महासिद्धि वड स्वर्ग ॥ ३३ ॥ मुकति जु वा
दि प्रकार की नहि पैयत विनु योग ॥ भैव
सभा लाकि पोरि मुकि पावत पौवरलो

सायुज
सारूप
सालिक्य
सातोजम

॥४॥ ग ॥ ३४ ॥ राजा नाम ॥ राजा अधिप पति
वडीन पति महीपति भूप ॥ नृप बब
भान सु पोरि पै वैठा सभा नृप ॥ ३५ ॥
इंद्र नाम ॥ सक्र सतक्रतु सचीपति
न संक्रंदन पुरहूत ॥ कोसिक वासव वज्र
त्रहा मघवा मातलि सुत ॥ ३६ ॥ जिष्णु
पुरंदर वज्रधर तुरा षाट रिपु पाक ॥
सो है जहे ह व षभा तु न है को है इंद्र वरा
क ॥ ३७ ॥ देवता नाम ॥ देव अमर नि
र्जर विबुध सुर सुमनस त्रिदिवेस
वृंदारक विमान गति अग्नि जिह्व अ
मतेस ॥ ३८ ॥ दिवषद लेषा वर्हिमुष
गीर्वाण अतिम्नाप ॥ कब न देव ना
रंक जहं जहां वैठे बनि गाप ॥ ३९ ॥ अ
प मृत नाम ॥ सोम पीयूष सुधा अमृत अ
गद राज सुर भोग ॥ अमी जहां का न

कथा मन्न रहत सब लोग ॥ ४० ॥ मत्या नाम ॥ विधि करि किंकर कर्म कर सेव गम्य नुगप दाति ॥ जन डोलत नहि मैं न सेच्छु अनुविन कछू कहि जाति ॥ ४१ ॥ कांतकरण नाम ॥ स्वांत हृदय मन्मथ पितात्मा मानस नाउं ॥ मन मन सो वैसहचरी भीतरि किहि विधि जाउं ॥ ४२ ॥ कोजन नाम ॥ कज्जल गज पाटल भ्री नाग दीप सुत सोइ ॥ लोकां जनह ग दै चली ताहि न देषै कोइ ॥ ४३ ॥ दासी नाम ॥ मत्या विधि करि किंकरी ऐचरी भरहिं जु अंभ ॥ राज हिं मरि मयन्म रज मैं कोउ वसि सिकोरंभ ॥ ४४ ॥ हीरा नाम ॥ निष्क पदिक सो वज्र पुनि हीरा दिपहिं जु सैन ॥ सकुचाति तिन तनु देषि जनु

भ

।५। भूपभवनकेनैन ॥४५॥ मंगलनाम ॥
कुजअंगारकभोमसोलोहितनम
हिवाल ॥ मंगलसेजहैंजगमेंगेहप
गघेरेजुलाल ॥४६॥ सुक्रनाम ॥ उस
नाभार्गविकाव्यकविदैत्यपुरोहित
नाम ॥ गजेमोतीजनुकलमलतसुक
दामअभिराम ॥४७॥ वृहस्पतिनाम
॥ जीवसिषंडिजगुरुधिषणगीष्प
तिअंगिरवाल ॥ दिपहिंपीतमनिधा
मतैंजनुकिवृहस्पतिमाल ॥४८॥ मु
क्तानाम ॥ ससिगोतीमोतीगुलिक
जलजसीपसुतनाम ॥ वंदनमालामु
ककीमानोविहसतधाम ॥४९॥ ल
क्ष्मीकेनाम ॥ श्रीपद्मापद्मालयापं
चाकमलाहोइ ॥ मांदृदिएनिधिसु

ता विसुकबहुभासोइ॥५०॥ जाकीनै
कु करा कबाविरहीसकैजगद्या
इ॥ सोलहभाव अभानिघरआपव
सीहैआइ॥५१॥माता नाम॥ अंबा
सावित्री प्रसू जननयत्री मा नाम ॥ज
ननी राधा कुंवरि की वैठी मंडन धाम
॥५२॥ नमस्कार नाम॥ वंदनं प्रह्व
तां प्रणाति नति अभिवादन करि ना
हि॥ आगे चली चतुर अली जहां कुं
वरि वर आहि॥५३॥ सीढी नाम॥ आ
रोहण आरोह पुनि निश्रेणी सो
पान॥ मणिमय सीढी चढि सखी ल
खीन काहू आन॥५४॥ पुत्री नाम॥
दुहिता पुत्री कन्यका तनया तनुजा
होइ॥ सुता जहां वृषभानकी तहां ग

दुग्धफेन समसेज परै वेठी तियरमनीय

६ ईस षिसेसाई ॥ ५५ ॥ सज्यानामः ॥ कसि
पुनतल्प सज्या सयन संवेसन सयनीयं ॥
५६ ॥ ऊर्द्धनाम ॥ उपरि ऊर्द्ध उज्ञान नभ
वनौ वितान सुक्कानि ॥ चंदवा चूंटो करि
मनो ऊपरि रा षोतानि ॥ ५७ ॥ उसीसा
नामः ॥ उपवरह उपवरह पुनि कंदु
क सो दुउ छीर ॥ कुसम उसीसा उससि
के वैठा मानगं भीर ॥ ५८ ॥ कुसुमनाम
॥ सुमन सुसुमन प्रसून पुनि पुष्प फ
लपिता नाम ॥ सुसम कुसम कोगेंदु
लियें छवि सों वेलत भाम ॥ ५९ ॥ मुखना
म ॥ आनन आस्य लपन वदन वक्त्र तु
ड छवि भोम ॥ मन रूपई मुख परत ये
दर्पन मुष पोन ॥ ६० ॥ कर्ननाम ॥ स्तुति
स्रव स्रवन स्रव दग ही कर्न सु भी छवि
भीर ॥ जनु विवनू पकमल कलीपुकोन

ससिमुखनीर ॥६१॥ सिर नाम ॥ उत्तमांग
कं सीर्ष सिर मोली मंग सुढार ॥ एह दुधा
करि उदित जनु सोहत चंद लिलार ॥६२
॥ केस नाम ॥ अलक सिरोरुह चिकुर
कच मूर्धज कुंतल और ॥ बाल विसाल सु
बालकें मैं नामन थन्त्रप चोर ॥६३॥ माथे
के नाम ॥ मस्तक अलिक लिलार मैं व
नि हि बिंदी जराइ ॥ मनहुं भाग ससि भा
लतें बाहरि निकसी आइ ॥६४ ॥ भ्रकुटी
नाम ॥ तंद्र भ्रू सु भ्रमालिका भौंहें भरी
अनिदाप ॥ जनु सिव परि रिस भहि विहुसि
मैं नचवायो चाप ॥६५॥ वक्र नाम ॥ कुटि
ल वाम सु इक्षास तपु निकुंचित भौंहनि
हैं ॥ ससि तें मुष कमल परि भ्रमत भ
नो विभ्रम भोर ॥६६॥ नेत्र नाम ॥ लोचन

७ ॥ अंबुकचक्षुदगाई छुण नूप अधीन ॥ सि
सएन तिनै नामको ज्ञावक भीने मीन ॥
६७ ॥ कर नाम ॥ हस्त बाहु कर पानि प
रक वहूं धरन कपोल ॥ वरकैर विंद विछु
द्रजनु सोवत तइं दुमडोल ॥ ६८ ॥ बनसी
नाम ॥ वडिस कुवेनी मीन हामत्स्या धा
नी नाम ॥ वेसरिसौं अरू मीजु लटमान
हुं वन छी काम ॥ ६९ ॥ दीर्घ नाम ॥ पृथु
ल गास्तु परिणाह प्रथु आपद तुंदू विशा
ल ॥ कवहूं दीरघ सास भरि विहासि परति
वरवोल ॥ ७० ॥ दसन नाम ॥ दसन दंत दि
ज रदन रद दमकन द्रमरं गभीज ॥ आपद
रज नु कमल में सीतलावि जुलि वीज ॥
७२ ॥ ओष्ठ नाम ॥ ओष्ठ वातीन प निर
दन छद अधर मधुर कहूं माइ ॥ लिखत

वरिसुजान॥२४॥ सखीवचननामम
मा॥ संग्याआहूयजोत्रेतुवनामछेम
कोधाम॥ अमीवरसयहदरसजिहू
तेसवपूरनकाम॥२५॥ श्रीनाम॥
स्त्रीनारीबनितावधूललनाजुवती
भाम॥ अबलाबालाअंगनाप्रमदा
कांताबाम॥२६॥ तरुनीरमनीसुंद
रीतनूदरीपुनिहोइ॥ तियनोसीति
हुलोकमैंरचीविरंचिनकोइ॥२७॥
ब्रह्मानाम॥ विधिविरंचिवेधापिता
धातासतधृतिहोइ॥ अब्जाकमला
सनधिषएाविषएास्वयंभूसोइ॥
२८॥ द्रुहिणचतुर्मुखआत्मभूपरमे
षीजगमांझ॥ जिहिंविधिकेविधितुम
रचीलोतंविधिमइपुनिबांझ॥२९॥ तुम

॥युधिष्टरनाम॥ धर्मजातनसुअजातरिपु
कौंतेयसुकुरुराव॥ नृपतिजुधिष्टिरसु
मकुंवरितैरेसोतिन्नभाव॥१०॥ अर्जुननाम॥ जिष्णुधनंजयविजयपुनि
फाल्गुनकिरटीसूक॥ गुडाकेसगांडी
वधरनरवीभत्सअचूक॥१॥ पार्थकपि
ध्वजस्वेतहयमध्यमपांडवनाम॥ अ
र्जुनजिमधनुधरअवाधिप्रेमअव
धितुभाम॥२॥ गंगानाम॥ विष्णुपदीनि
र्झरनदीसुरदीर्घिकाहोइ॥ मदाकि
नीविपथगागाजह्नुसुतापुनिसोइ॥
३॥ गंगाजिमयाजगतमैपापहारिसु
भकारि॥ तिमतुवकीरतिसरितविय
कियपुनीतनरनारि॥४॥ सरीरनाम
॥ कायकलेवरकुणपवपुदेहआत्मा

ंग॥ विग्रह उपधन संहत नधाम सं
रिपतंग॥५॥ तुवन नसम सरिकरन
लागी कनक अग्नि रूप लेइ॥ कोम
लसरस सुगंध नहिं कोक विउपमा
देइ॥६॥ वारिजनाम॥ पुंडरीक पुष्क
र कमल जल जन्म वज अंभोज॥ पं
कज सारस तामरस कुवलय कंज
सरोज॥७॥ उत्पल हरि अरविंद पुनि
पद्म विधि पितानाउं॥ क्यों मुख नलि
न मलिन कछु देखति हौं वलिजाउं
॥८॥ चंद्रमानाम॥ इंदु सुधानिधि क
लानिधि अवजजीव ससि सोम॥
ससधर हिमकर निसाकर कुमद
बंधु हिमरोम॥९॥ ससी ससांक मृगां
क विधु मृगवाहन श्रीभ्रात॥ द्विज

११॥ पतिनिसपतिछत्रपतिऔषदपतिनिधि
जात॥१०॥चंद्रकलाजिमचंदतैंरहतनिन्या
रीहोइ॥इमअवलोकतिवालेकौंकहिव
लिकारनेकोइ॥११॥कामनाम॥मदनम
नोभवपंचसरकुसुमसरासनहोइ॥मी
नकेतनकंदर्पहरिदर्पकमनसिजसोइ
॥१२॥पुष्पचाँपस्वरदलनअतनप्रद्यु
मननाम॥हृस्यमकरध्वजआत्मभू
मारमनमथकाम॥१३॥एतिपतिअरू
एतिजगतमैंयेकैजीवपरान॥तिन्यारज
त्रदेखियैंअचरिजकुंवरिसुजान॥१४
॥मेघनाम॥धाराधरजलधरजलद
जगजीवनजीमूत॥अभ्रवलाहकमु
दिरहरिकामकधूमसपूत॥१५॥नीरद
क्षीरदअंबुवहवारिदजलमुकनाउ॥घ

नसैंविछुरीविज्जुरीजिमदेखियतिहैंवलिजा
उं॥१६॥विज्जुरीनामा॥छिनरुचिछटाअ
कालकीनडिनचंचलाहोइ॥दामिनिवि
नुघनुनहिवनैघनविनुवनैनसोइ॥
१७॥सेनानामा॥अनीधुजनीवाहनी
चमूवरूथनिसैन॥सेनाविनुनपति
नवनैनपविनुवनैनसैन॥१८॥धनुष
नामा॥धनुकोदंडइष्वासपुनिकार्मु
कीरपुसंनाप॥चापविनायनवनकछु
पनचविनानहिंचाप॥१९॥मधुव्रतना
मा॥मधुकरमधुलिहमधुपअलिअ
लिनसिलीमुखभंग॥चंचरीहरोलंव
हरिकीलालपसारंग॥२०॥षटुपदद्वंदीद
रभभमरपुनिद्विरफरसचेर॥भमरवि
नाकेनुकिनकछुकेनुकिविनुनहिंभौ

र॥२१॥वल्लीनाम॥ब्रजनीविसनीवल्लरी
विसनीलताअतान॥अमरवेलिजिमभू
एविनुइमदेअततुवमान॥२२॥प्रियाना
म॥इष्टादइतावल्लभाप्रियाप्रेयसी
होइ॥पियकेनैसोप्रियतमाऐसोरनद
खीकोइ॥२३॥मित्रनाम॥सुहृदमित्र
वलभसखाप्रेयसदयतसुजान॥कैसेपि
यसोजानुवलिनकरिअकारनमान॥
२४॥पुत्रनाम॥आत्मजसूनुअपत्यतनु
ननयतनंघयजान॥नगधरेनंदकेनंद
सौंनकरिगर्वकीवात॥२५॥नरनाम॥मा
नुखमर्त्यमनुष्यपुनिमानवमनुजपुमा
न॥नरजिनिजानहिंनंदकोइश्वरपुरुख
पुरखन॥२६॥वेदनाम॥आम्नायश्रुतिनि
सम्त्रवधर्ममूलसवकाम॥निगमआग

मजाकौं कहैं सो वह सुंदर स्याम ॥ २७ ॥ जोगेस्व
रनाम ॥ रिषि भिक्षु कलपसा जती व्रतीज
पी मुनि च्छा हि ॥ जोगा हृत्तमन विमल क
रि षो जन हैं वलि जाहि ॥ २८ ॥ महादेवनाम
॥ गंगाधर हर सूल धर ससि धर संकर वा
म ॥ सर्व संभु सिव भीम भव भर्ग भाम री
पु काम ॥ २९ ॥ त्रिनयन त्रिंबक त्रिपुरआ
री ईस उमापति होइ ॥ जटी कपर्दी वृष
भधुज रुद्र धूर्जटी सोइ ॥ ३० ॥ उग्र पिना
की भूतपति पसुपति मड ईसान ॥ वाम
देव से देव वलि जाको करत हैं ध्यान ॥ ३१ ॥
॥ सेसनाम ॥ सेस महा अहि सर्पपति धर
नीधर नअनंत ॥ सहसवदन से गुनग
नैत दमिन पावन अनंत ॥ ३२ ॥ कुबेरनाम
॥ पुन्यजनेश्वर वैश्रवण धनद ओल

विलहोइ॥गुह्यकपतित्र्यंवकसषाराजरा
१३ जपुनिसोइ॥३३॥नरवाहनकिंनरअधिप
जक्षाधीसकुवेर॥सोतुवपियपदपरसक
हुपावननाहिंसुवेर॥३४॥वरुणनाम॥वरु
णप्रचेतापासपतिअपपतिजलचरईस
॥सोतुवपियकेपगनिपरघसतरहतनि
तसीस॥३५॥धर्मराजनाम॥वैस्वतसोइदं
डधरअंतपतिरविसुतसोइसंजमनीपति
श्र महिषध्वजसमवर्त्तीपुनिहोइ॥३६॥अंतककौ
लकृतांतजमजगजातेडरपंत॥सोतुवपिय
भ्रूभंगतेथरथरथरकापंत॥३७॥असुरना
म॥दानवदनुजदयतदनुसुरारिपुअसुर
अनंत॥उडिउडिपरहिंपतंगजिमअजदी
पकतुवकंत॥३८॥विनायकनाम॥द्वैमात
रहेरंवपुनिलंबोदरइकदंत॥मूषकवाहन

गजवदनगणपतिगिरिजातात॥३९॥को
रिविनायकज्ञोलिये॥महिसकोगरको
रि॥तोयातेरकंतकेगुनआवैनहिंयेटि
४०॥जन्मनाम॥भवेंउद्भवईदगंभजनेम
जानिउत्पतिहेभाम॥जन्मसफलतवही
जवहिंभाजियेंसुंदरस्याम॥४१॥अघना
मकावचनवंचकनाम॥ब्याजीजिलकुटि
लकुहकछिद्रमीकितवछलीजु॥कपटीको
हूरकुंवरकीकेतीकहतिभलीजु॥४२॥स
ौवचनहरिननाम॥येनहरिनवातनपंव
पदहरीकुरंगसोआहि॥मृगासिसुकेसे
रगालियेंवालिप्योरेइनराहि॥४३॥पाप
नाम॥येनव्रजनदुःकतदुरितअघम
लीमसपंक॥अघआमीवाकीलखिसकल
सकस्मलसमलकलंक॥४४॥पापमहा

॥२४॥ नंदवनदो जाको रंचक नाम ॥ ताकहुं तूंक
पटीक हत्ति कहा न कहते भाम ॥४५॥ धू
लि नाम ॥ धूलि धूसरी मेहर जपांसु सर
करा कंद ॥ जो पद पंके जेरनु कहुं तरसतस
नक सनंद ॥४६॥ पाषाण नाम ॥ ग्रावउप
ल पाषाण सिल अरु पुनि अस्म सुसार
पाहन पानी मै तरै जाके नाम अधार ॥४७
नौका नाम ॥ उडप पोत नौका पल्लव नत
वहित्र चल जान ॥ नाम नाव चढि भव उ
दधि के तेतरत अग्यान ॥४८॥ सुधि नाम
सोणीत रक्त को क्रोण पुनि अस्र कअ
ज रक्त जान ॥ लोहू पीयत तिपूतना पूतभ
ई हू गात ॥४९॥ राक्षस नाम ॥ कौणप अश्र
प पुन्यजन निकषा सुत क्रव्याद ॥ कर्बुर
आसुर निसाचर जातुधान दनुनंद ॥५०॥
अघ सेरा छसपाप की मैदेषी जाति हाति

उलटि समानी पीय मैं परगट जा की जोति ॥५१॥ मिथ्या नाम ॥ मिथ्या मुधा मृषा अनृत वितथ अलीक सदंभ ॥ ऐसे पियरा जि झूठ बलि क्यों बोलिय निरंभ ॥५२॥ निकट नाम ॥ अजि सुपास अविदूर तट उप समीप अभ्यास ॥ अवासि निरदर होइ गौर है निरंतर पास ॥५३॥ चंदन नाम ॥ गंधसार श्री खंड हरि मलयज भद्र पटीर चंदन को ईंधन करत मलया वासी भी र ॥५४॥ मीन नाम ॥ सफरी अन मिष मत्स तिमि एथु ऐमा झष मीन ॥ मकर अलूपी अंडभव वैसारिण पाठीन ॥५५॥ छीर समुद्र के वारिचर रहत चंद ढिग आहि चंद हिं मंद न जानहीं जलचर मान तताहि ॥५६॥ सूर्य नाम ॥ सूर्ज दिवाकर विभाकर दिनकर भास्कर हंस ॥ मिहर

तिमहरसहसकरउस्नरश्मितिगमंस॥
॥१५॥ ॥५७॥विघ्नविरोचनदिभावसुमारतंडत्र
दुअंग॥दिनमणिद्युमणितरणितप
नसविनासूरपतंग॥५८॥चित्रभानुव
हझ्ञानुविवस्वानभामान॥अंसुमानु
तु हरिभूरविअंवरमणिभगवान॥५९॥
रविमंडलसमप्रणतिकौकहियतपु
रखपुरान॥सोवहनंदकिसोरवलिक्यौं
कौजेअपमान॥६०॥समुद्रनाम॥सिंधु
सरनपतिनीरनिधिअंभोनिधिकूप।
र॥द्वरवानअर्नवजलधिसागरपारा
वार॥६१॥रत्नाकरगुनरूपकौमोहनगि
रिधरलाल॥हिलिमिलिप्रेमकलोलिये
यौनवालियेवाल॥६२॥वानरनाम॥क
पिसाखामृगवलीमुखकीसप्लवंगलं

गूर॥ वांनरकरवरनारियरदियोविधाता
कूर॥ ६३॥नायकावचन॥वलभद्रनाम॥
संकर्षणवलभद्रवलरौहिणयवल
राम॥ नीलांवररेवतिरवनमुसलीपा
लककाम॥ ६४॥ जमुनाभेदीतालघुज
प्रलंवघ्नजलवेति॥ हरिहलधरकिवीर
कहुंकितीवडाईदेति॥ ६५॥सखीवचन
॥रूक्षवचननाम॥ उदासीनकाहलप
रुषरूक्षसतव्यसलील॥ ग्राम्यवचेनेत
कौंकहैंजिनकेसुंदरसील॥ ६६॥ पृथ्वी
नाम॥ पृथ्वीछितिछोणीछमाधरणी
धात्रीगाय॥ उर्वीजगतीवसुमतीवसु
धासर्वसहाय॥ ६७॥ अचलाविपुला
सागराधराकास्यपीहोइ॥ गोत्राअव
नीभूमिभूरत्नाअनंतासोइ॥ ६८॥ महिमि

षि

२६ दनीकुंभनीइलाकहत्तपुनिताहि॥विस्वं
भएवसुंधराथिरएउर्वरअाहि॥६९॥सव
धरजिहिंइकसीसपर॥सोहतिजौंकनही
र॥कौंअावहिंतुवअांअिनरनाहलधर
केवीर॥७०॥तीरनाम॥खगतोमरजिह्म
ग॥अस्त्रसुगविसिखसिलीमुखवाण॥
कणमार्गणनराचइषुपत्रीसोअरा५
प्राण॥७१॥तीछुनसाइकघायमिलि
सिसिरिसरीरमिलाइ॥वचननीरकी
पीरवलिमिटैजौजुगजांहिं॥७२॥अ
ग्निनाम॥पावकवह्निज्वलनदहनसी
सोधनंजयहोइ॥सुक्रउसर्वुधपवन
सषवीतहोत्रपुनिसोइ॥७३॥जातवे
दजलजोनिपुनिहरिकृसानुब्रहभा
नु॥अनिलविभावसुधूमधुज॥अमर

जिह्न चित्रभानु ॥७४॥ अगनिदग्धजेद्रुम
ता फिर फल फूलनि देइ ॥ वचनदग्धजे
हीय वालि वहुरि न अंकुर लेइ ॥७५॥ अ
पनाम ॥ मंद मूर्ख जड मुग्ध तम अप
कटुक पद सठ ॥ मूरख जन जानै नहीं म
नि जैसैं कपि कंठ ॥७६॥ नगपनाम ॥ कृती
कुसल कोविद निपुण छुरण प्रवीण
निस्नात ॥ पटु विदग्ध नागर चतुर तेजा
नै रसवान ॥७७॥ अपराधनाम ॥ अघं
आगस हेलन अहितऔगुन जो कछु
पीय ॥ कूप छांह जिमराखिये यों न भावि
तीय ॥७८॥ प्रीतिनाम ॥ दोहदराइप्रण
सुहित भाव राग अनुराग ॥ कितहि ग
पावहप्रेमनुवसाधिकरहिवडभाग

१७ ७९ ॥ पर्वतनाम ॥ अगनगभूभृतदरी
मत अहार्या सिखरी कूट ॥ सैलसिलोच्चय
गोत्र पुनि अद्रि अचल सिलजूट ॥ ८० ॥
गिरि गोधनु जव वाम कर धर्यो स्याम अभि
राम ॥ वह धर धरनु वही यतैं अजहूं मि
टति न भाम ॥ ८१ ॥ भुजंगनाम ॥ पंनग नो
गउरग भुजग जिह्मग भोगी सर्प ॥ चक्षु
श्रवा हरि सरीसृप काकोदर गरदर्प ॥
८२ ॥ आसीविख विखधर फणी मणी
विलेसय व्याल ॥ चक्री दर्वी गूढपा लेलि
हकै वल काल ॥ ८३ ॥ काली अहि गंजन
सभैं मैं रांखी गहि वांह ॥ सांवरे पीय कै प्रे
मवस परत हुती देह मांह ॥ ८४ ॥ पीडाना
म ॥ वाधा विंधुरा व्यथा रुज पीडा आर
ति गलानि ॥ अवजुन परस ति पीर वालि

कितसीथीयहवानि ॥ ८५ ॥ वननाम ॥
काननविपनअरन्यवनगहनक
छकांतार ॥ अरवीमैंअकिलईमोह
ननंदकुमार ॥ ८६ ॥ कपोलनाम ॥ गंड
कपोलसुगालनैकरहांतोकरितीय
स्यांमफुंदामअतूलकादिषिसंकित
मोहीय ॥ ८७ ॥ राहुनाम ॥ सैंहकेयसु
र्भानुतमराडविधुंतुदभाइ ॥ वदनचं
द्रमममनहुंयहराहरह्योढिगआइ
८८ ॥ संध्यानाम ॥ निसमुषसंध्या
पित्रप्रसूसायंकालप्रदोष ॥ सांझ
परीहैक्यौंतिआवछाडिछियाकरिरो
ष ॥ ८९ ॥ विषनाम ॥ गरलहलाहल
गरअम्रतकालकूटरसमार ॥ रस
मविसुजनिघोरवालिचलिअव-

१८ करनविचार ५०॥पपीहानाम॥कालकं
ठदातूहहरिचातकसारंगनांउं घनस्यां
मुकेंपपीहरहिंनहिंनवनैवालिजोउं
५१॥मृगनाम॥सुंदरवरअभिरामकु
सकांतकमनकमनीय सासरम्यवं
धुरसुसमदर्सनीयरमनीय ५२॥ रू५
चिरसुपेसलमुग्धमधुभव्यअपिव्य
प्रसस्तलोनेनंदकिसोरपरवलिकरौं
विस्वसमस्त ५३॥मनोहरनाम॥मंजुल
मंजुमधुरलालितवल्गुमनोगपउदार
अजुतामोहननंदकोसववृजकोआ
धार ५४॥धननाम॥द्रविणद्रव्यसुइ
वित्तवलरायअर्थसुखवोक धनजे
तोवृजनंदकेतेतोनहीँतिहुंलोक
५५॥नायकाकेनेत्रनामा नाम॥दासी
...५०

गनिकामज्जिकाबलासंभलीहोइ॥रूपा
जीवाकामुकीपुन्यजोबिनासोइ॥१९६॥
वारवधूजगवल्लभाकहतपुंश्चलीता
हि॥मुहंसेभारिकिनिवोलिहैह्यौंकोउ
वेस्याआहि॥१९७॥सतीवचनापतिव्रता
नाम॥साध्वीसतीमनास्विनीसुचरित्रा
सुचिहीय॥पतिवरतातुवनामैनहोति
जगतमैंतीय॥१९८॥पार्वतीनाम॥उमा
अपर्नाईश्वरीगोरीगिरिजाहोइ॥मृडा
चंडिकाअंबिकाभवाभवानीसोइ॥१९
९॥आजीमेनकआत्मजासर्वमंगला
नाम॥सिवाभईसिवउरवसीतोहीजपि
जपिभाम॥२००॥कृपानाम॥मायाद
याकृपाघृणाअनुकंपाअनुक्रोस॥
करुणाकरिकरुणानिधेराधेजेनि

करिऐस ॥१॥ खड्गनाम ॥ रिष्टकुक्षेयकृपा
ण असि मंडलाग्र करवाल ॥ अगु जे नोतें ना
कहा घाय करनेहे वाल ॥२॥ रात्रिनाम ॥ क्षु
णदा क्षपा तमस्विनी तमी तमिस्रा हाइ ॥ नि
सि सर्वरी विभावरी रजनि प्रदोषा सोइ ॥
॥३॥ सुखद सुहाई सरद की केसी जामिनि
जाइ ॥ कंतिय निहीं जिनि बिनु वलि लागो
मोहि बलाइ ॥४॥ नीचनाम ॥ निम्न निगा
तनि कुब्ज अध अवर्व च जकुरीीव ॥ हु
खि उठि है वालि जौं उं यह सुंदर सुखें सा
ब ॥५॥ आकासनाम ॥ अंबर पुष्कर वियत
नभ अंतरिक्ष घन वास ॥ व्योम अनंत वि
हायसि असुरवर्त्म आकास ॥६॥ गगन
जुगुडं गन वनि रहे चितवो तजि वालि रेख
रूषन कों नुव नूप मन सुरतिय कियरूरोष
॥७॥ नखनाम ॥ का... पुनर्भव नख करनेक

हैं गभीनी भाम ॥ तव कोष्ठिति हिं जु सनति
है न हि कछु नहहसौं काम ॥ ८ ॥ संग्राम नाम ॥
आयोधन रन आजि मध आहव संघ
समीक ॥ संपराइ संगर समर संजुग कल
ह अनीक ॥ ९ ॥ सुरत जु द्वंद्व जव पी यसौं तो हि
हो हि गो भाम ॥ नख नारच नि विनु कुंव
रिकरि है कहा प्रनाम ॥ १० ॥ अल्प नाम ॥ अ
ल्प तुच्छ लव सूक्ष्म तनु निपर रू सो दरतो
र कहि बालिय तो मान सचिर एथ्या है किं
आर ॥ ११ ॥ सुवनाभि नाम ॥ लूना सूत्रा म
कैरी कुंडली नाभि पुनि होइ ॥ जनु को उमक
री गुरु करि पकरी विद्या सोइ ॥ १२ ॥ नदी ना
म ॥ श्रोता श्रोती निम्नगा पगा ह्रदिफा हो
सरिता धुनी तरंगिनी तटिनी ह्रदनी
सो ... सैवालिनी श्रोतास्विनी द्वैपवति
जलमा लं नदी महीं को ८ बाट मैं सौ ब

॥२१॥

कहाहैवाल ॥ १४ ॥ कोटभाइको नाम ॥ अनुज
अवरजसनाभिसुद्दज विष्टकनिष्टकनीय
लघुभैयाकोसौंहनुहिं कहिवलिकानुवहि
य ॥ १५ ॥ पिता नाम ॥ तातजनकसविनापिता
ववा नातरब्रतिकाम ॥ नुहिपहिलेनंदनंद
कहुँदेनहुनोहेहेभाम ॥ १६ ॥ विवाहना म ॥
परिणानिवेसनपरिनयनउद्वहजनाविवा
ह ॥ संततिभईनभयानतहुदुष्पुदेतीउहिना
ह ॥ १६ ॥ नायका वोलीमदिरानाम ॥ मधुमा
धवीमदिरासुराअरोरवारुणीहेय ॥ अ सव
मयकादंवरीमधुवारीमयरेय ॥ १७ ॥ सिद्धाप्र
सनावुद्धिहाहालासिंधुप्रसूति ॥ मदमीयु
ज्यौंवकतित्योंकहावकतिहेइति ॥ १८ ॥
खीवोलीसुभावनाम ॥ प्रकृतिनिसर्गसह
जप्रनजविस्वसलीलसुभाव ॥ कवन

२ सह

गे वटे ही परति सुंदरि सरल कहाव ॥१९॥ अ
ति नाम ॥ भ सअ अति सय अति वेल अल
अधिक अतिं तनिनंत्त ॥ अति सर्वत्र भ
लीन ही कहि गये संत अनंत २०॥ वृ
क्ष नाम ॥ साखी विटप अनोक कुह कु
जे द्रुम पादप होइ ॥ बर्हि दली पत्री पली
वद्धि प घररूह सोइ ॥२१॥ अलपतनल
पतन तउ तरैं अलप कलप से जात ॥ इत य
हूँ या री प्रिये न मा सू धैं करति न वात ॥
२२॥ पत्र नाम ॥ पत्र पर्न दल वरहि छद रं
चक फरकत पात ॥ तुव आगम भ्रम चकि
त ह्वै उडिउ ठिट्ठौ लौं जात ॥२३॥ दिसा ना
म ॥ कं न्या काष्ठा गो हरित आसा ककुभ
कहंत ॥ तव के वेद हिं औरवलि चितवत
हूँ हैं कंत ॥२४॥ पवन नाम ॥ स्वसन मरुत ग

॥२१॥ ति मरुत्त हरि श्वासु गजगति पराग ॥ अनि
ल प्रभंजन गंधवह नभस्वान पवमान ॥
२५ ॥ तुव तन परमल लैजु वन गवन त
धीर समीर ॥ ताकौं वहुसन मान करि प
रिंभन बलवीर ॥ २६ ॥ शब्द नाम ॥ नाद
निनद निश्वन सुखि रुत रव धुनि क
लरव ॥ वैं मुरली मैं कहत वालि है श्रा रो श्र
रि श्राव ॥ २७ ॥ दुख नाम ॥ विधुर कंद नरथ
दूत नद गहन वजन श्रघ नौं ॥ दुरु
जिनि देश्र वगावन तुव नाहिं करि नरि
वालि जाउं ॥ २८ ॥ वज्र नाम ॥ क्रसानि कु
लिस निर्घात पवि वज्र श्रासि तेरी नीरि
परो वुरे के धाम जो विराशि कै रस माहि
२९ ॥ लज्या नाम ॥ ह्री लज्या ब्रीडा त्रपा
कुच्चाति कैयौं विनु काज ॥ चलि वलि प्यारे

लिषक के हाथ की किलक ऊ सी है जाइ
७३॥स्यामनाम॥कालस्याम में चक कन्या
सित चिबुक नीलक नमैन मन हुंसी
लक्षा वकी मुह करि मृदी मैन॥७४॥तौ
बूलनाम॥ द्विजनते बोल क्या हिवेलि दल
पान वदन दुति देइ॥पीक लीक छुविंक
ठ दिषि सषी वलेपालेइ॥७५॥कुचना
म॥ उरजपयोधरकुच स्तनंउरमंडन छ
वि भेद॥ कंचन संपुट मैमनो पूजि रूपा
छेदेव॥७६॥पंकतिनाम॥रजी ख्रवली
ख्राति नति रे मपंति इहि भाइ॥ जनु इतौं
उतरूलमलै वरवेनी कौ जाइ॥७७॥क्षुद्रघं
टिका नाम॥रसना कांची किंकिनी सूत्र
म षला जाल॥ क्षुद्रावलि जनु मैंन घरवां
धौ वंदनमाल॥७८॥सरकनाम॥उपा

८

संगनूरागीपुनिदृसुधीनूणनिअंग
पिंडरीमनमथभांतिसीकुवतिआप
नेरंग॥७९॥नूपुरनाम॥पादांगदमं
जीरपुनितुलाकोटिपदमाल॥नूपुरऊ

स नकनउऊनमनुनमथवीनरसाल॥
८०॥वस्त्रनाम॥चोलनिचोलदुकू
लपटआोढैसूक्षमचीर॥कांचवरी
नीरंगजिमऊलकतवसनसरीर॥
८१॥दर्पननाम॥दर्पनसुइआदरस
पुनिमुकुरमुकरतोलेइ॥फेरिधारति
निजदृगनिमैंपियजुदिआईदेइ॥
८२॥वीनानाम॥तंत्रीवीणावल्लकी
बहुरिविपंचीआहि॥वीनवजावति
सहचरीतरजतिवरजैतिनाहि॥८३॥
॥मुकनाम॥रक्तचंचुसुकर्कारपुनि

हु वापढतहहरिनाम ॥ रुकिरुहरावत्ति
ता हिपुनिविहसिपरतिवरवाम ॥ ८ ॥
॥ श्रीतरुध्याननाम ॥ गुन्नतिरोहतत्रं
तरितगूढदुनूहनिलाइ ॥ लोकां[illegible]न
लुकिसओदेहितिंसवभाइ ॥ ८५ ॥ श्री
नामा ॥ ऋवकमलकीलालेजलप
पुष्करवनैवारि ॥ अमृतअर्नजीव
भुवनचनरसकुसपापारि ॥ ८६ ॥
घैंपुष्पविग्रसर्वमुधकंकवंधर[illegible]
तोइ ॥ उदकपाथसंवरसलिल[illegible]पै
ठेहैसोइ ॥ ८७ ॥ पानीनैनपयारि
अंजनहं[illegible]लोकीय ॥ अगटभईपि
कासमी[illegible]पटसंसकितहीय ॥ ८
मयनामा ॥ सलनसदर[illegible]मानंकमय
[illegible]हिजपुनिनाम ॥ डरतिडरतिसदै

॥९॥ सहचरी गाई कुं वरी कै पास ॥८९॥ चरन
नाम॥ चरन चल निजगति वंत पुनि पा
अंघ्रि पद पाद ॥ पग वंदन करि कुं यहि
ठहीस न मुख जोइ ॥९०॥ हरदी नाम ति
नागो रंक कांचनी रजनी पिंडा ना म
हरद रंग जिम चून मिलि स्यो दे विवरे
भाम ॥९१॥ क्रोध नाम॥ क्रोध कोप
मर्ष रोष मन्यु तमु होइ ॥ छो मघ
मित्तादिखि कुं वरी कहुं डरी स पि सो
इ ॥९२॥ समय नाम॥ समज समय प
नीह वय वेला अन मिलु काल ॥ ब
बरसखि तन चितै रंच कै वे लि वा
९३ ॥ नायका वाली के नाम॥ म मद
भ नामें यम व्याभवसि वर क त्या
कि तहीं कोंक छु कु ... पुछत

९९

का त

यहिं मिलि औौ षट घात किलाज ॥३०॥ स
मूह नाम ॥ समुदय ब्यूह समूह गन प्रकरानि
करनिकुरंब ॥ पूर पुंज ब्रज पटल चय संचय
निचय कदंब ॥३१॥ विसर निवह संदोह
घ ओघ घव्रात घन जात ॥ चक्र अनंत
समाज तति तोम ग्राम संघात ॥३२॥ के
दल जाल कलाप कुल वार अनेक सुबं
द ॥ बहुत कही मैं बात पै भई तबै की बुंद
॥३३॥ आग्या नाम ॥ बय आदेस निदेस
पुनि आग्या सासन नियोग ॥ आयसु है
अव जौ उँ बालि लहे प्रीति के लोग ॥३४॥
तनक नाम ॥ दर स्तोक ईषद अलप धी
र सुमंद मनाक ॥ नव साषित न मुरि रंगारि भ
मुस की कुंवरि तिनाक ॥३५॥ नायका वचन
अर्धरात्रि के नाम ॥ निसि निसीथ औ म

॥२२॥ हा निसि होन लगी अधराति ॥ कोच लिहे
अव सोइ रहि जैहैं [illegible] परभात ॥ ३५ ॥ आभि
प्राय नाम ॥ चैत्य हाइ आयस सखी पायो
हिये को भाइ ॥ धाइ पग न पारि विनय क
रि भुज भरि लिई उठाइ ॥ ३६ ॥ चरन धरन ना
म ॥ पदत्राण पर पीठ सु उपानह जरी ज
राइ ॥ पनहीं मन हीं भावती आगैं धरी
बनाइ ॥ ३७ ॥ उच्चधामनाम ॥ सौध हर्म्य
प्रासाद तैं चली जुवति गति मंद ॥ उज्ज
ल जल धर तैं धरनि आवत मानहु चंद
॥ ३८ ॥ मकरमरीची नाम ॥ ॥ जोन्हा कौं
मुदि चंद्रिका मकरमरीची नाउं ॥ जो न्ह
सि पसरति गाव मैं धोरो हसि वालि गा
उं ॥ ३९ ॥ वीथी नाम ॥ रथ्या वीथी वीथिका
पाय प्रतोली आहि ॥ गली गली न बरंग

ली चली कली लीलै नाहि ॥ ४१ ॥ अंधारे के नाम
॥ अंधतमिश्रीततिमिरतमध्वांतकुवर
नीहार ॥ तिमिरमिट्यामगमांरुकोवद
नचंदउजियार ॥ ४२ ॥ उपवन नाम ॥ आरा
मवनउद्यानपुनिउपकाननआराम
॥ वहवलितेरेवागजहेंमाल निवंदानाम
४३ ॥ वसंत नाम ॥ कुसुमाकरीतुपति
सुरभिकामसखामधुनाम ॥ तिनेवसंत
निवसंतजहेंतुवध्रतापहे भाम ॥ ४४ ॥ वि
हंगनाम ॥ द्विजसकुंतपच्छीसकुनिअंड
जाविहगविहंग ॥ वियगपतत्रीपत्रस्थ
पत्रीखेगपतंग ॥ ४५ ॥ खगठौठौवोलैजु
वलिकोमलकंठसुजात ॥ तुवआगमजु
नुमुदितद्रुमकरतपरसपरवात ॥ ४६ ॥ पी
पलनाम ॥ चलदलपिप्पलगजअसन

॥२३॥ बोधीवृक्ष अस्वत्थ ॥ पीपलदैवालि दाह
नैजो रिहत्य धारिमत्थ ४७ ॥ नूननाम ॥
पिकवल्लभ कामांग पुनि मदिरा सख
सहकार ॥ यह रसाल फल भार दिषि जनु
तुहिकरत जुहार ॥ ४८ ॥ चंपकनाम ॥ चां
पेय सुचंपक सुरभि हेमपुष्प सुकुमार ॥
इन चंपा पापा परत वालि लियें पुह पड पहार
॥ ४९ ॥ मधूकनाम ॥ माधव मधुद्रुम मधु
स्रवा मधुकीनल गुडफूल ॥ या मधूक
की ऊल कदिषि कछुतु वकंठ नितूल ॥
५० ॥ दाडिमनाम ॥ रक्तबीज हालिमकर
कसुकप्रियक हृमभार ॥ ये दाडिमकन
दे षिवालि कछुतु वदसन आकार ॥ ५१
॥ वेलनाम ॥ सुरभि सलूथी सदाफलना
नवेल मल्लूर ॥ ये श्रीफल तुवकुचनि
समकहत्त वेहुतन कविकूर ॥ ५२ ॥ तमाल

कदंब नाम नीपप्रियक्षोतूलपुनि मदिरागंध
सुकहि यह कदंब बालिकुं बीराजी हिय चाहि कूंद
दहमाह

नाम॥ कालकंध तापिच्छपुनि तिंदु
क यह जु रसाल॥ जानतें वैठ कालि व
लितु वन मोहन लाल॥ ५३॥ धतूर
नाम॥ कनकाह्वय उन्मत्त पुनि कितव
धूर्त धितूर॥ यह खाये बौराइ यन जि
नि छुवो बालि वलि दूर॥ ५४॥ ढाक नाम
॥ वात पोथपुनि ब्रह्मद्रुम किंसुक पर्ण
पलास॥ केसू विरही जन कहूं नाहरन
हर विलास॥ ५५॥ बहेरा नाम॥ अक्ष विभी
तक सर्ष फल संवर्त्तक कलि वृक्ष
भूतावास बहेर तह छूजिनि चालि म
गक्ष॥ ५६॥ कोढ नाम॥ कोलवल्लि
का कपिलता विसखपरी नाउं॥ कं
डू करि हे अंग यह कोछ न छुवलि जाउं
५७॥ सुपारी के नाम॥ घोटाका मुगुवा
कपुनि पुंगसुपारी नाउं॥ बारबार यो क

॥२४॥

हतिहैजनकचहोवालिजाँउँ॥पछ॥ना
लियरनाम॥वानरमुखलांगूलपुनि
नालियेरसुभकाम॥नारिनायकरि
निरखिवालियेसबकरतप्रनाम॥पप्पे
॥भरीचनाम॥रिक्काउअरणाकालकाहू
सफलापुनिनाउँ॥मिरचलतापाप
रिकहैभलीकरीवालिजाँउँ॥६०॥सूंठि
नाम॥विश्वानागरजगमिश्रकमहा
औखधीनाँउँ॥यहसुंठीकरजोरिकै
पगनिपरैवालिजाँउँ॥६१॥पीपलिनाम
॥कोलाकृष्णामागधीतिगमतंदुला
होइ॥वैदेहीस्यामाकणामुंगीकहियेसो
इ॥६२॥वालिदूतपीपलिपगगहेकहैव
हुतपरकार॥अवतैंदूतननिकीरिकुंव
रिपीतमप्रानअधार॥६३॥हरडैनाम
॥अभयापथ्याअव्यथाअमृतचेतकी

होइ॥ कायस्थापुनि पूतना॥ सिवाग्नेय
सी सोइ॥ ६४॥ यह हरीत की पांय परै हरै उ
दरके रोग॥ जिमतुव गिरिधर लाल के
वाल सबै सुखजाग॥ ६५॥ प्रवाले के
नाम॥ सुखि रान टी नली मपुनि कपो
तांघ्रि परवाल॥ यह विद्रुम पांय परिक
है हो वालिचालि इहिं काल॥ ६६॥ दाखना
म॥ स्वाद्वी मदुका मधुरसा कालमेख
ला होइ॥ गुडा प्रिया लागोस्तनी चारु
फला पुनि सोइ॥ ६७॥ बुद्धा यह वलि पां
परें चक दुहिं तन चाहि॥ नहिं नगसी
ली वालसी निपट रसीली आहि॥ ६८॥
केसरिनाम॥ कास्मीरी कुंकुम रुधिर
खवल्लभा नांउ॥ केसरिहूं गभरि कह
ति मुहिं नेक छुवो वालिजांउ॥ ६९॥ का
कोली नाम॥ हरिरानी जाती काजूथि

॥२५॥ कारेमपुछियकाजाइ॥ यहजूथीगुंथी
गुननिठाहीलेतिवलाइ॥७०॥ माल
तीनाम॥ सुमनाजातीमाल्लिकाउन्न
मगंधाहोइ॥ अविद्याप्रयवादिनी
राजपुछियकासोइ॥७१॥ यहमालति
वालिपांपरेपुहपड़हपुहेजासु॥ कछू
कतुवतनवासुसोंमिलातिताकी
वासु॥७२॥ कुंदनाम॥ माघीकुंदपग
निपरेहेरोवलिइहिं नाहिं॥ याकीक
लियनिमेंकछूतुवदसननकीछां
हिं॥७३॥ गुंजानाम॥ कालाचिंचुपुनि
कृष्नलोगुंजाकरतिप्रनाम॥ रूस
कहनमुखरहिदुयोयातिआतिअभि
राम॥७४॥ वंधूकनाम॥ वंधुजीववंधू
कपुनिजपाकुसुमननपाषि॥ येफूल
नवलिहुपहरहिआवफूलेतुहिदेषि

॥७५॥केतुकीनाम॥ तालियजूरीतराहु
माकेतुकिकरतिप्रनाम। हरषिहरात्रिव
रषैकुसुमेनाहि निरखिहेभाम॥७६॥मा
धवीनाम॥ अलिउत्सवअतिमुक्तसु
कुंद्रमाधवीनाँउं। इनवासंतीकहत
मुहिनेकछुवावानिजाँउं॥७७॥संजीव
नीनाम॥ जीवाजीवनिमधुश्रवासंजी
वीपुनिनाँउं। यहसंजीवनिपाँपरैजेसी
तवालिजाँउं॥७८॥लवंगनाम॥ देवकुसु
मश्रीसंगपुनिवहुदिजापकीनाँउं। इत
लवंगकीवालियहपाइपरैवालिजाँउं॥
७९॥द्रुलाद्रुचीनाम॥ चंदनिकांनेफुटि
कहतनतकुटावालूनाँउं। इनयेलाठीटी
विनतिसुमनकरोवालिजाँउं॥८०॥कांवू
लीनाम॥ नांवूलीमहिवल्लरीद्विजापा

॥२६॥ नकीवेलि॥ सरस भई तुव दरसतें वालि रंच कमुखमलि ॥८१॥ मकरंदनाम॥ सार च मधु पुनि पुष्प रस कुसुमसार मकरंद॥ एजे ति हिं रत असी सतु हिये आये अलिवृंद ॥८२॥ वटनाम॥ लटीक पट्टीरिक फल वहु पद वटनिगोध॥ दुहिं वंसीवट निकट द्वै वालि वालि पियहि निरोध॥८३॥ सरोवरनाम॥ पद्माकर कासार सर सरसी ताल तडाग॥ यह मानस जु सरोजामि सफुल्यो जु तुव अनुराग॥८४॥ कालिंदीनाम॥ रविजा जमअनुजा जमी कृष्णा स्यामल आप॥ यह जमुना सव स मुद फिरि आवति तुव परताप॥८५॥ तरंगनाम॥ भंग तरंग कलोल सु द्वीची ऊर्मि सु भाइ॥ लहरी हाथ पसारि वालि जमुना परसति पाइ॥८६॥ तीरनाम॥ कूल पु

न
लिनउपकंठतट निकट रोघ अभ्यास ॥ ती
रतीर चालि जौं उवालिये आये पिय पास ॥
८७ ॥ वेतस नाम ॥ वंजुल सीत विदुलर
थी अभ्र पुष्प वानीर ॥ ये वेतस के कुंज व
लि जहाँ बैठे वलवीर ॥ ८८ ॥ इंद्री नाम ॥ गो
हर्षीक संकरण गुण इंद्रिय ज्यों असुपाइ
मिले परस परापिया पिया परम प्रेम के भाइ
८९ ॥ द्वै के नाम ॥ जुगम जुग्म जुग द्वंद्व जम
मिथुन उभय वि वीय ॥ जुगल किसोर स
दा वसैं नंददास के जीय ॥ ९० ॥ माला नाम
॥ माला अल्ल जगुन वती यह जु नाम की दा
म ॥ करिहै जो नर कंठहिं सो ह्वै है छवि धा
म ॥ ९१ ॥ इति श्री नंददास विरचिते नाम
माला समाप्त ॥ ॥ संवत् १८२४ माघमासे
शुक्लपक्षे [illegible] नामा [illegible] नंददासजी के
[illegible] लिखितं [illegible] कुशलापाठार्थ

२७ ॥ स्वस्ति श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ अनेकार्थ
लिख्यते ॥ दोहा ॥ जो प्रभु जोति रू जगत
मय कारन करन अभेव ॥ विघ्न हरन सब
सुख करन नमो नमो ति हे देव ॥ १ ॥ एकेव
स्तु अनेक है जगमगात जेग धाम ॥ जि
म कंचन तैं किंकिनी कंकन कुंडल नाम
॥ २ ॥ उच्चरि सकत नहि संसकृत और करन ॥
समरथ्य ॥ तिनहित नंद जथा सुमति भा
या नेकारथ्य ॥ ३ ॥ शब्द एक नाना अरथ्य
पैयत जहां सुछंद ॥ सो अनेकारथ्य सु
गम करत जथामति नंद ॥ ४ ॥ अथ भा गो
[illegible] ॥ जो इंद्री गो वाक जल सुरग वज्र थग
छंद ॥ गो घर गो तरु गो किरनि गोपालक
गोविंद ॥ ५ ॥ सुरभी नाम ॥ सुरभी चंदन सु
रभि मग सुरभी बहु रिवसंत ॥ सुरभी चार
तवन सुनै जो जग करता कंत ॥ ६ ॥ मधु

सब्द॥ मधु वसंत मधु चैत्र जल मधु म
दिरा मकरंद॥ मधु नभ मधु पय मधु सुधा
मधुसूदन गोविंद ७॥ कलिसब्द॥ कलि
कलेस केलि सूरमा कलि निखंग संग्राम
कालि कलिजुग मैं और नहि केवल केसौ
नाम ८॥ आत्मासब्द॥ मन बुधि चित्त सु
भाव तनु धर्म जीव हंकार॥ ये सब कहियें
आत्मा परमात्मा आधार ९॥ धनंजयस
ब्द॥ आगिन धनंजय कहि ह सकावि पवन
धनंजय आहि॥ अर्ज्जुन बहुरि धनंज
य सुकृस्न सखा थी जाहि १०॥ अर्ज्जुनस
ब्द॥ अर्ज्जुन द्रुम अर्ज्जुन धवल अर्ज्जुन
कंचन होइ॥ सहसबाहु अर्ज्जुन कह्यो अ
र्ज्जुन पांडव सोइ ११॥ पत्रसब्द॥ पत्र पर्न
को पत्र रथ बाहन पत्र सुचित्र॥ पत्र पंख
बाधिन हि दिये उडि उडि मिलंते मित्र॥ १२॥

पत्रीशब्द॥ पत्रीतरुपत्रीकमलपत्रीवहु
रीविहंग पत्रीसरकराचित्रजिमिइमैसे
वहुनवरंग १३॥धामशब्द॥ धामतेजअरौ
धामतनुधामकिरानिग्रहधाम धाम
जोतिजोब्रह्मसोइकहियतसुंदरस्याम
धामजोतिजोब्रह्मसोइकहियतसुंदर
स्याम १४॥कामशब्द॥ कामभोगअभि
लाषपुनिमनमथकहियेकाम कामका
जजिनिभूलिमनभजिलैनिसिदिनरा
म १५॥वरहीशब्द॥ वरहीद्रुमवरहीअग
निवरहीकुर्कटनाम वरहीमोरकिसो
रकेधरेचंदसिरस्याम १६॥वामशब्द॥
वामकुटिलअरौवामशिववामकामकर
नाम वाममनोहरकौकहतजेससुंदर
स्याम १७॥भवशब्द॥ भवशंकरसंसार
भभवकहियेकल्यान भवजुजन्मजेग

फल नवजव भजिये भगवान॥१९॥ कंशब्द॥
कं सुख कं जल कं अनल कं सिर कं पुनि काम
कं कंचन सों प्रीति जस अस करि हरि नाम॥
२९॥ षंशब्द॥ षं मन षं गृह षं नभ षं रंध्र
नि को नाम॥ षं इंद्रिय दु षटे न है दया करो हरि
स्याम॥२०॥ कल्पशब्द॥ कल्प दिवस वि
धि कहत कवि कल्प समर्थ जु होई॥ कल्प
कपट न जि हरि भजो कल्प वृक्ष सम सोइ
२१॥ करशब्द॥ कर गज पुष्कर हस्त कर
कर कहिये पुनि दान॥ कर विष सम न जि
विषय रस भजि हरि श्री नीधान॥२२॥
॥दरशब्द॥ दर जु कहत कवि संष कहुँ दर
दर को नाम॥ दर दर तें राषहुँ कुं वरागीरिध
र स्याम॥२३॥ वरशब्द॥ वर सुंदर वर
रूप नि वर जु देवता देत॥ वर दुलह सेका

२९ ॥ हानिनम्रजातियहिपहीलेन २४ ॥ वसुशब्द ॥
वसुसुरपतिवसकर्नपुनिवसजुवसभको
नाम ॥ वसुसुधर्म्मकहिहरिभजोजोचाहोसु
खधाम ॥ २५ ॥ पतंगशब्द ॥ तरनिपतंगपतंग
खगपावकवहुरिपतंग ॥ सवजगरंगपतंग
कोहरियेकैनवरंग ॥ २६ ॥ दलशब्द ॥ दल
कहियेनृपकोकटकदलपत्रनकोनाम
दलवरहीकेचंदसिरधरेस्यामअभिराम
॥ २७ ॥ पलशब्द ॥ पलआमिषकौंकहतक
विघटउसासपलसोइ ॥ पलजुपलकहरि
विचिपरैगोपिनसतजुगहोइ ॥ २८ ॥ वल
शब्द ॥ वलवलिनधीरजवहुरिवलरूपकते
कोनाम ॥ वलसाहसवलदैत्यपुनिवलकहि
हियेवलराम ॥ २९ ॥ अलशब्द ॥ अलअ
र्थसमर्थअलअलपूरनकोनाम ॥ अ

लक्ष्मभरनक्षलक्ष्मलखुतजिभजमनमो
हनस्याम ॥२०॥ वयशब्द ॥ वयविहंग
कौंकहतकविवयकहियेपुनिकाल ॥
वयजुवहिक्रमजातहैभजिलेमदनगो
पाल ॥२१॥ जीवशब्द ॥ जीवब्रहस्पतिकों
कहतजीवकहावैवृंद ॥ जीवप्रानतमा
नितजीवैजीवजीवनंदनंद ॥२२॥ मार
शब्द ॥ मारदाडिमीमोरविसमारकहा
वैकाम ॥ मारमीचतेंतवबचैजपैराम
अभिराम ॥२३॥ सारशब्द ॥ सारधीर्ज
कों सारबलबहुरिपुव्यसनसार ॥ सार
कहतपुनिबीजकिहुंधर्मसारसंसार
२४ ॥ कलभशब्द ॥ कलभकहतकरिसा
वकहुंकलभबहुरिउजाल ॥ कलभक
लुषकलिकालतैंकाटहुकरुनाकृपा
ल ॥२५॥ नभशब्द ॥ नभअभ्रागगननभमा

॥३०॥ द्रुपद नभ सावन को मास ॥ नभ आकास
नभ निकट हीं घट घट राम निवास
॥ वसुशब्द ॥ अष्ट अमर वसु वह्नि वसु
वसु जी किरनि वहु नीर ॥ वसु धनु जग
मे सोइ धनि धनु जा के वल वीर ॥ ३७ ॥
॥ पटुशब्द ॥ पटु तिसकुन को कहत कवि
पटु आरोग कहंत ॥ पटु प्रवीन जो जगत
मे रमै जु हृक मनि कंत ॥ ३८ ॥ तुरंगशब्द
॥ गरुड तुरंग तुरंगमन वहुरि तुरंग तु
रंग ॥ हरिन कुरंग कुरंग मन रंग पोन हरि
रंग ॥ ३९ ॥ आत्मजशब्द ॥ आत्मज क
हियै रुधिर अरु आत्मज कहियै काम
आत्मजा पुत्र सुपुत्र सोइ भजै जु सुंदर स्या
म ॥ ४० ॥ कवंधशब्द ॥ विन सिर कहत क
वंध है है कवंध पुनि नीर ॥ एक सयेक

कबंधत्ति हिंदीनी गति रघुबीर ॥४१॥
॥हंसशब्द॥ हंस तुरंग अरु हंस रवि हं
स मराल सुछंद ॥ हंस जीव को कहे
त कवि परमहंस गोविंद ॥४२॥ बा
णशब्द॥ बाणक है वे बलि तनय
विसिष आहि पुनि बाण ॥ बाणक
हत पुनि स्वर्ग कहु श्री हरि पद नि
र्वाण ॥४३॥ पयोधरभूधरशब्द॥ मे
घ अर्क कुच सैल हु मये जु पयोधर
आहि ॥ भूधर गिरि भूधर नृपति भू
धर आदि वराह ॥४४॥ वरुणशब्द॥
वरुण कहत पुनि नीर कहुं वरुण सा
र को नाम ॥ वरुण हे जब नंदन वधा
ये केसे स्याम ॥४५॥ गोत्रशब्द॥ गोत्र ना
म को कहत कवि गोत्र सैल सुनीयं

॥३२॥

न॥गोत्रवंसमोद्धधन्यजेहैंगोविंदगुननि
यंत॥४६॥नुशब्द॥ननुपुरीरविसारन
नुतनुसुरूमननुनात॥ननुविरेकोउज
गतमैजानैहरिरसवान॥४७॥वालशब्द
॥वालशिरोरूहवालशिसुमूककहावै
वाल॥वालसोइहैजगतमैभजेनवाल
गुपाल॥४८॥जालशब्द॥जालरूरोमा
जालगनजालदंभअरूमंद॥जालभग
रवीघ्याजगतनिरिषमूलिजिनिनंद
४९॥कालशब्द॥कालअसितअरोका
लवयधर्मराजपुनिकाल॥कालव्या
लकेकालहरिमोहनमदनगुपाल॥
५०॥तालशब्द॥तालतालहरितालपु
निकरसुस्फालनताल॥तालवस्रफ

नव्याइअरहत्यो जुनंदके लाल ॥५१॥
॥लजशब्द॥ जललमीनमोतीजलज
जलजसंषअरूचंद॥ जलजकमलक
एफेरनैब्रजआवतनंदनंद॥ ५२॥ व्याल
शब्द॥ व्यालकुंनरव्यालगजवासुर
अंगनुव्याल॥ व्यालसर्पछीरचढिनचै
नरवरवसुनंदलाल॥५३॥नमशब्द॥न
मनामसगुनराहुनमनमजुतिमिरतम
क्रोध॥ नमअगपानकहुंहरहुहरिउरध
रदीपज्ञबोध॥५४॥गुनशब्द॥गुनराज
सगुनसूत्रपुनिगुनकोदंडकिजेह॥गु
नचरिअगोविंदकेगौवहुहियमरिनेह
५५॥अविशब्द॥ अविपर्वतअसेषपु वि
निअविसविताकोनाम॥ अविरहलकसु
नजगतकेयेकैसुदरस्याम॥५६॥वनशब्द

॥३१॥ न॥गोत्रवंससोऽद्धधन्यजेहैंगोविंदगुननि
यंत॥४६॥तनुशब्द॥ततनुपुरीएविस्तारत
नुततनुसुक्ष्मततनुनात॥तनुविरेकोउज
गतमैजानेहरिरसवात॥४७॥वालशब्द
॥वालषिरोरूहवालशिसुमूककहावै
वाल॥वालसोइहैजगतमैभजैनवाल
गुपाल॥४८॥जालशब्द॥जालरूरोआ
जालगनजालदंभअरूमंद॥जालभग
रवीद्याजगतनिरिखभूलिजिनिनंद
४९॥कालशब्द॥कालअसितकोका
लवयधर्मराजपुनिकाल॥कालव्या
लकेकालहरिमोहनमदनगुपाल॥
५०॥तालशब्द॥तालतालहरितालपु
निकरसुस्फालनताल॥तालवसंफ

लअपाद्दरहत्योजुनंदकेलाल॥५१॥
जलजशब्द॥ जलजमीनमोतीजलज
जलजसंषअरुचंद॥जलजकमलक
(फेरतैब्रजआवतनंदनंद॥५२॥व्याल
शब्द॥ व्यालकुंजरव्यालगजवासुर
अंगनृपव्याल॥व्यालसर्पसिरचढिनचै
नटवरव्रजसुनंदलाल॥५३॥तमशब्द॥त
मतामसगुनराहुतमतमजुतिमिरतम
क्रोध॥तमअगपानकहुंहरहुहरिउरध
दीपअवोध॥५४॥गुनशब्द॥गुनराज
सगुनसूत्रपुनिगुनकोदंडकिजेह॥गु
नचरित्रगोविंदकेगौवहुहियभरिनेह
॥५५॥अविशब्द॥अविपर्वतअमेषपु वि
निअविसविताकोनाम॥अविरदतकसु
वजगतकेयेकेसुंदरस्याम॥५६॥घनशब्द

॥ ३२ ॥

वनपानीकौ कहत कवि वन वारिद कौ ना
ल ॥ वन कानन नैन सुरभि सँग आवत म
दनगुपाल ॥ ५७ ॥ घनशब्द ॥ घन दृढ घ
न विस्तार पुनि घन जिहँ घड़त लुहार ॥ घ
न अंबुद घन सघन अरु चित घन नंद
कुमार ॥ ५८ ॥ वर्नशब्द ॥ वर्न स्तुति अच्छर
वरन वरन द्विजादिक चारि ॥ वरन अरु
न सित पीत अरु अवरन येक मुरारि
॥ ५९ ॥ पोतशब्द ॥ पोत कहौ वेनि पट सिसु
पोत जु पत्र अनूप ॥ पोत नाव जु गजल
धि मैं कृस्न नाम सुखरूप ॥ ६० ॥ बुधशब्द ॥
बुध पंडितनि कौं कहत कवि बुध ससि सूनु
वखान ॥ बुध हरि कौ अवतार इक बोध
भये जिहँ ज्ञान ॥ ६१ ॥ अनंतशब्द ॥ गगन अ
नंत कहंत कवि बहुरि अनंत अनेक ॥

सेयअनंतगिनंनवुधहरिअनंतअरूये
क ॥ ६२ ॥ छुयशब्द छुयनिवंसेकौंकहत
कविछुयकहियेछुयरोग ॥ छुयपरलै
मधिहरिविषैंलिनहोतसवलोग ॥
६३ ॥ राजिवशब्द राजिवसासिराजिवकम
लराजिवमुकतामीन ॥ राजिवनाभिगुवि
दकीजहुँविधिसेआलिलीन ॥ ६४ ॥ लो
कशब्द लोकआकरनलोकजनलोकदे
हरसमूलि ॥ तीनिलोकसुनउदरदिखि
रहीजसोमातिभूलि ॥ ६५ ॥ शुक्रशब्द ॥ शुक्र
वीर्जक्रौआगिनिपुनिशुक्रजेठकोमास
शुक्रआजहुँवामनहिप्रत्तिवलिहित
भरनजुसास ॥ ६६ ॥ खगशब्द ॥ खगरविखग
ससिखगपवनखगघनखगपुनिवान
खगविहंगखगदेवतामनखगसमन

हिंमान॥६७॥कलापशब्द गुनकलाप
नूनीरपुनिअभरनआहिकलाप॥बर
हीचंदकलापजगरुरिकोनामआलाप
६८॥ब्रह्मशब्द ब्रह्मब्रह्मकुलब्रह्मविधि
ब्रह्मदेवअरुजीय॥ब्रह्मनंदकेसदन
मैंत्राहिनचावतितीय॥६९॥उडुपश
ब्द॥ उडुविहंगउडनछत्रगनउडकेवर्न
कआहि॥उडुपचंदनौकाउडपउडुपजु
गरुडवराहि॥७०॥मंदशब्द मंदसनीस
रमंदखलमंदअल्पअघमंद॥मंदमूढ
नरतेजगनजेनभजेनंदनंद॥७१॥वारन
शब्द वारनकहियेबराजिवोवारनपुनिस
न्नाह॥वारनगजहरिउधरियोआनिग
ह्योजनवेगाह॥७२॥स्पंदनशब्द स्पंदनजलकौ
कहतकविस्पंदनचित्ततरंग॥स्पंदनरथ

जिहँ रुकमिनी लै आये श्रीरंग ॥७३॥ मंथी
नाम ॥ मंथी ससि मंथी मदन मंथी साहस्र
चंड ॥ मंथी वहु च्यौं राहु जो हरि कीनो विव
खंड ॥७४॥ कोसिक नाम ॥ कोसिक उलू विहंग
इक कोसिक गुग्गुल नाम ॥ कोसिक विश्वा
मित्र जिनि जाचे रघुवर राम ॥७५॥ पुष्कर
नाम ॥ पुष्कर जल पुष्कर कमल पुष्कर सुँड
गयंद ॥ पुष्कर तीरथ पापहर पुष्कर नाभि
गुविंद ॥७६॥ अंबर नाम ॥ अंबर अमृत कौं कह
त हैं अंबर गगन सुभाय ॥ अंबर पीत सु
स्याम तन रहि मनो तडित सुभाय ॥७७॥
संबर नाम ॥ संबर जल संबर म्रगन ल संबर
सैल अनूप ॥ संबर वौ घहु जौ ठिगहि कृ
ष्न नाम सुखवनूप ॥७८॥ कंवल नाम ॥ कंवल
गो गल तन कहत हैं कंवल जल परवाह ॥ कं

॥३४॥

वलधेनुचरावत्यौंश्रीढ्योजगकेनाह॥
७९॥ नगनाव नगकहतद्रुमनगरतन
नगकहियेपुनिधाम॥नगगिरिजातैंका
न्हकोनागरनगधरनाम॥८०॥नागना
व॥नागपत्रश्रीनागगजनागदुखवर
वाम॥नागसर्पसंसारकोसिद्धमंत्रहरि
कर्ननाव नाम॥८१॥ कर्नकहौवेरविननयकर्न
कहतपुनिकान॥कर्ननावजिहिंसेयि
येंकर्नधारभगवान॥८२॥द्विजनाव द्वि
जपछीकौंकहतकविद्विजकहियेपुनि
दंत॥तीनिवरनद्विजनवभलेजेवजौने
भगवंत॥८३॥अजनाव अजवकराअ
जपितामहअजकहियेपुनिईस॥अ
जजोवनमरनरकहतअजयकेजग
दीस॥८४॥शिवनाव शिवसुखशिवक

स्यानपुनिअरुपुरुषशिवहोइ ॥ शिव
शंकरशिवमालिलक्षोकल्मसदाशि
वसोइ ॥ ८५ ॥ विरोचन ॥ वहिविरोचन व
सूर्यपुनिचंदविरोचनगात ॥ दैत्यवि
रोचनधन्यसोइजाकेबलिसन्तान ॥
८६ ॥ बलिशब्द ॥ बलिबरहीबलगूजरी
बलिभोजनबलिभाग ॥ बलिराजाकी
जौंऊँबलिजाहियहहरिअनुराग ॥ ८७
बकशब्द ॥ बकपावककौंकहतकवि
बकभिडहाकोनाम ॥ बकदानव
दलिदेवाशिवएखेसुंदरस्याम ॥ ८८ ॥
रजशब्द ॥ रजंरजसआरक्तरजअरुरजजु
वतिनमेहोइ ॥ रजधूलीरजपापकहुँ
हरिनिर्मलजलधोइ ॥ ८९ ॥ कुशसी कुशशब्द
तासुतदर्भकिसकुशकहियेपुनिनीर

३५ कुञ्जरानवदलिद्वारिकासुपुरवसेवलि
वीर॥९०॥कंबुभुवनम॥कंबुसंखश्रो कंबु
गजकंबुइद्रकोनाम॥भुवनगगनश्रो
भुवनजलत्रिभुवननायकस्याम॥९१॥
कुटशाद॥ कुटवहुतश्रो कूटगिरिस्रह
रनिकूटकहंत॥कूटकपटकौंनिपट
नाजिभाजिमनश्रीभगावंत॥९२॥ख
रशाद॥ ॥खरहासखरसानपुनिख
रनीछुनविख्यात॥खरगर्धभसमसो
जगतजिहिनभिदैरसवात॥९३॥हर
नीशार हरनीत्रातिमाहेमकीहरनीभग
कीतीय॥हरनीजूथीजोसुकोफूलमा
लहीहीय॥९४॥कुज॥जम कुजमंगल
कुजत्रञ्जद्रुमकुजभोमासुरनाम॥ज
मजुगजमजमराजनैंराअहुसुंदरस्याम

॥९५॥ धात्रीशब्द धात्री कहियत आवला धात्री धाय बखानि॥ धात्री धरनी सीसपर सो हत्ता तिलपर वानि॥९६॥
रसनाशब्द॥ रसना कांची कहत कवि रसना बहु चोदाम॥ रसना जिह्वा सुबस है कौं नरटनि हरि नाम॥९७॥ शिवाशब्द॥ शिवा शंभु की सुंदरी शीवा स्याम की भाम॥ शिवा हरर पुनि रोग कों इम अचहहि हरि नाम॥९८॥ शिवा संगाली उग्र शीशिवा हरर पुनि होइ॥ शिवा शंभु की सुंदरी यह जानै सब कोइ॥९९॥
रंभाशब्द रंभा कहियत अपसरा रंभा कदली नाम॥ रंभा गो कल गाइ हुं धुनि जिनि मोहे अजवाम॥१००॥ वारुणीश ग

व

॥२६॥ जगतिकहियेवारूणीसुरावारूणीनामप
श्चिमदिसिपुनिवारूणीवरूणवैसीजि
हंगाम ॥१॥ मायाशब्द ॥ मायाकुलमाया
दयामायानिहकहंत ॥ मायामोहनलाल
कीजिनिमोहेसवजंत ॥२॥ दुलाशब्द ॥ दु
लामहीवुधतियइलादुलाउमाअभिरा
म ॥ दुलासरस्वतिसोभलीजामैंहरिको
नाम ॥३॥ जोतिशब्द ॥ जोतिनछतगन
जोतिद्युतिजोतिनेत्रअरूआदि ॥ जो
तिब्रह्मसोइनंदघरप्रह्योअलिंदहिला
गि ॥४॥ सुमनाशब्द ॥ सुमनाकहियेमा
लतीसुमनामुदितातीय ॥ सुमनारति
सोकान्हसौंकरिलैलंपरजीय ॥५॥ इ
डाशब्द ॥ इडाकहतनभदेवताइडाभूमि
अभिराम ॥ इडाअंबिकामातमुहितति

दीजैहरिनाम ॥६॥ रसशब्द ॥ रसजलर
सविषकाषरसरसपारदपुनिहोइ
रसहेअंगाएदिनवरसमेहरिरससो
इ ॥७॥ निशाजाशब्द ॥ निशाजामि
नीकोंकहतनिसाहरिद्रानाम ॥ अ
जाछागमायाअजाजिनिमोहेअ
जधाम ॥८॥ विधिशब्द ॥ विधिवेधा
विधिदेवपुनिविधिकहियेजुविधा
न ॥ विधिकिविधिजोविधिरचीसोई
विधिपरमान ॥९॥ जिलशब्द ॥ जिल
अलसकरिवालितनराजिलकहावेमू
ढ ॥ जिलकपटतजिहरिभजोघटघट
अगटतगूढ ॥१०॥ हसशब्द ॥ हसकह
तजगसुंडकोंहसनसत्रसुभाइ ॥ हस
हाथतेंडारिजिनिनरहीहातनपाइ ॥

॥२७॥

॥११॥ कृतांतशब्द॥ आगम शास्त्र कृतांत स
बपुनि कृतांत सिद्धांत॥ जम कृतांतांत केत्रा
सतैत्रा तोक मलाकांत॥१२॥ मित्रशब्द॥ मि
त्र भानु को कहत कवि मित्र आगिन को नाम
मित्र मीत सब जगत के ये कै सुंदर स्याम॥
॥१३॥ सारंगशब्द॥ रवि सासि हय गय गग
न गिरि केहरि कुंज कुरंग॥ चातक दादुर दी
प अलि ये कहिये सारंग॥१४॥ हरिशब्द॥
इंद चंद अरविंद अलि कपि केहरि किं कां
न॥ कंचन कौंच कुरंग वन घन कोदंड न
भ भान॥१५॥ पानी पावक पवन पयग
ज गिरि नाग नरिंद॥ युरुरि दूत ने मुकट
म निहहि दूस्यरगो विंद॥१६॥ ध्रुवशब्द॥
ध्रुव निश्चय ध्रुव जोग पुनि ध्रुव ध्रुव पद
ध्रुव ताल॥ ध्रुव तो रजी भिआरल तेगुन
हिं जुगुन गोपाल॥१७॥ सुमनशब्द॥ सु

मनससुरसुमनसपुहपसुमनसवहुरि
वसंत॥सुमनसनेजिनमनवसेकोम
लकमलाकंत॥१८॥विटपशब्द॥विटप
अंगपल्लववविटपाविटपकहंतविस्तार
विटपवक्षकीडारगहिठाढेनंदकुमा
र॥१९॥दानशब्द॥दानद्विजनकौंदीजि
येगजमदकहियेदान॥दानसौंवैरीलेत
वनगोपीप्रेमनिधान॥२०॥गौरीशब्द॥
गौरीअष्टवर्षसुताजुतियगौरीहरत्तियहोइ
गौरीसतीपतिव्रतावहुरिहरिद्रासोइ॥२१
॥स्यामाशब्द॥स्यामाजुवतिरजस्वलास्या
मारजनीहोइ॥स्यामापीपरिकौंकहैंस्या
मात्तिपुनिसोइ॥२२॥हरिद्राशब्द॥कह
तहरिद्रावनथलीनिशाहरिद्राहोइ॥वहु
रिहरिद्रामंगली[illegible]मंगलकर[illegible]नी
सोइ॥२३॥कुंडाशब्द॥वेस्यानटीकटहरी

॥३०॥ मधुमाषीअरुलाष ॥ इनकौंकविक्षुद्राक
हैपुनिक्षुद्राहैदाष ॥२४॥ सुधाशब्द ॥ सुधा
दुग्धविज्जुरीसुधासुधालेपनीधाम ॥ सुधा
वधूधात्रीसुधासुधाअमृतकोनाम ॥
॥२५॥ सीताशब्द ॥ सीतानिधिसीताक्षमा
सीतागंगाहोइ ॥ सीताकहिपुनिदेवता
रामसुंदरीसोइ ॥२६॥ वलाशब्द ॥ वला
सैन्यवसुधावलावलाऔषधीहोइ ॥
वलाकहावैलक्ष्मीजिहिंचाहैसवकोइ
॥२७॥ कंशब्द ॥ कंधनकंमनकंसलिल
कंकंचनकंकाम ॥ कंसुखकंसिरप्रेम
पुनिजाकेवसहरिस्याम ॥२८॥ हारश
ब्द ॥ हारमुकतकोफूलकोहारक्षेत्रवि
स्तार ॥ हारविरहकोवोलिवोमारगकहि
यतहार ॥२९॥ अहिशब्द ॥ अहिवासर
अहिराहपुनिअहिदूकदानवनाम ॥ अ

रिकाली सिर पर नचे नरवर वपु घन
स्याम ॥३०॥ कुथ शब्द ॥ कुथ कंथा कुथ
कीट द्रुक दर्भ विहरि कुथ होइ ॥ नात स्ना
ई विप्र कुथ कुथ करि कंवल सोइ ॥ ३१ ॥
॥ कुंत शब्द ॥ कुंत सलिल स्रो कुंत कुश कुं
त अत्र नल नभ काल ॥ कंवल कुंत कहत
कवि कुंत जु खड्ग कराल ॥ ३२ ॥ कुंतल श
ब्द ॥ सूत्रधार कुंतलक ह्यौ कुंतलक परी
वेश ॥ खड्ग पानि कुंतल वहरि कुंतलक ॥
हिय केस ॥ ३३ ॥ वलि शब्द ॥ वलि पूजा
वलि दैत्य नृप वलि तिय को मधि भाग ॥
वलि वी वी वलि लछमी जाके सदा सु
हाग ॥ ३४ ॥ तंत्र शब्द ॥ तंत्र अस्त्र सुत तंत्र
पुनि सिद्धि औषधी तंत्र ॥ तंत्र कहत
संतान कौं सिद्ध मंत्र पुनि तंत्र ॥ ३५ ॥ पुं

॥३२॥

ड़ीकशब्द॥ पुंडरीक सरसिंहपुनि पुंडरीक कर्ण्णिकास पुंडरीक पंकज कह्यो पुंडरीक र विज्ञास ॥३६॥ चक्रशब्द॥ चक्र चरनाय चक्र गन चक्र देस पुनि होइ॥ चक्रवाक खग चक्र पुनि चक्र सुदर्शन सोइ ॥३७॥ परिघशब्द॥ परिघ पवन जल रथ नदी परिघ सूर ससि शूंग॥ परिघ वज्र पर्वत परिघ परिघ जु शस्त्र विशेष॥३८॥ कांतारशब्द॥ कांतार जु कांनन कह्यो कांतार जु कांतार॥ दुर्भिछ जु कांतार इक्षु भेद कछुप कांतार॥३९॥ खर्ज्जूरशब्द॥ गर्भनि रा खर्ज्जूर पुनि रूरूपो खर्ज्जूर छुद्र जाति खर्ज्जूर इक पुनि चांदी खर्ज्जूर॥४०॥ द्रोनशब्द॥ द्रोन महिष दिसि द्रोन पुनि द्रोन वृक्ष गृह कोन॥ द्रोन काक कौ द्रोन गिरि कुरु आचार्य द्रोन॥४१॥ कार्य्यशब्द॥ कार्य्य

ालविश्राखपुनिकाष्ठानिष्ठाहोद्र॥काष्ठा
ष्ठनिसावहुरिकाष्ठावसुधासाइ॥४२॥
॥सितशब्द॥सितनीछ्नसितशुक्रपुनि
सितनृपेकोनाम॥सितहिमगिरिसितस्वे
पुनिसितसंकरसुखधाम॥४३॥गुरुश
ब्द॥गुरुगरिष्ठगुरुजीवपुनिगुरुजुवहुत
नजाहि॥सिखदाता माता पिता येसि
रेगुरुम्नाहि॥४४॥नंदनशब्द॥नंदनचं
नकौकहत नंदन कहियेतात॥नंदनव
पुनिईंद्रकोनंदनंदन विख्यात॥४५॥
॥केतुकौशब्द॥केतकीनभकेतकीकुश
केतुकोसूरजचंद॥केतकिकहतमनो
कौकेतुकिवहुर्यौछंद॥४६॥अनमिष
ब्द॥अनमिषकहियतदेवताअनमी
मीनकहंत॥अनमिषकालकरालयह

जा को कछु न अंत ॥ ४७ ॥ क्षमा शब्द: ॥ क्षमा
तिं दीन दी क्षमा पी पति होइ ॥ क्षमा बहुर्यौं [illegible]
पदी हरि एषी अंबर गोइ ॥ ४८ ॥ अजा शब्द ॥
अजा छाग सब को कहै अजा अविका होइ
अजा जु माया ईश्वरी जिहि मोहे सब लोइ ॥
॥ ४९ ॥ स्नेह शब्द ॥ तेल स्नेह स्नेह घृत कहुँ
यौं प्रेम सनेह ॥ सो निज चरननि गिरिधरनु
नंददास कौं देह ॥ ५० ॥ शब्द येक नाना अरथ यौं पै
यें जहां सु छंद ॥ सो जु अनेकार्थ सुगम कहै
जथा मति नंद ॥ ५१ ॥ जो अनेकार्थ अर्थ कौं पढै
सुनै नर लोइ ॥ नाहि अनेक अरथ्य है पुनि प
मारथ होइ ॥ ५२ ॥ इति श्री नंददास विरचि
भाषा अनेकार्थ संपूर्णम् ॥ ॥ संवत् १[illegible]
२४ फाल्गुन मासे कृष्ण पक्षे सप्तम्यां गु
दिने दुंदपुल हरि हिमद्रि केसा लिखित [illegible]

ॐश्रीगणेशायनमः॥अथअलंकारमालाभूषणलिष्यते॥दोहा विघनहरनमंगलकरनसुमुषहोतसुसहाइ वनतिकरौंकरजोरिकैदीजेग्रंथबनाइ १ जिहिकीनौपरपंचसबअपनीइछापाइ ताकौंहौंबंदनकरौहाथजोरिसिरनाइ २ करुनाकरपोषितसदासकलस्रष्टिकेप्रान ऐसेईश्वरकौहियेरहैरैनदिनध्यान ३ मेरेमनभ्रतुमरहोऐसौक्योंकहिजाइ तातेयहमनआपसौलीजैसेवकलाइ ४ रागीमनमिलिस्यामसौंभयननगहिरालाल यहअचरजउज्जलभयोतजौमलतिहिकाल ५ अथनाइकाभेद दूकनारीसौहितकरैसोअनकूलबषान बहुनारीसौप्रीतसमताकौं

दछनजान ६ मीठीवातैंसठकरक
रिके महाविगार आवतलाजनधृष्ट
कौकिपकोरधिकार ७ स्वकिया
पतिसोंपतिपरनारीउपपति वेसक
नाइकको सदाजानिकाहीसोरति ८
अथनाइकाजाति पद्मिनीचित्रि
निसंषनीअरु हस्तिनीवषानि द्वि
विधिनाइकाभेदसचारि भांति तिय
जानि ९ नाइकाभेद स्वकिया
व्याहीनायकापरकी पापरवाम
सोसामान्यानायकाजाकेधन
सोकाम १० स्वकियाभेद विन
जानेअग्यातेहजोवनजानेग्या
त मुग्धाके द्वैभेदहैक विस्रव्व
नवजात ११ मध्यासोजामेंमु
दनतजात ११ मध्यासोजामेंमु
वोलज्यामदनसमान अतिप्रवीन

घोटा वहै जाको पिय मे प्रान १२ परक्रिया
भेद क्रियो वचनमै चातुरी वहै विदग्धा रीति
वहुतदुराचैहै सखी लक्षिता कीय हरीति १३
गुप्ता रतिगोपित करै त्रिपतिन कुलटा आहि
निहचै जानत पिय मिलन मुदिता कहियत
ताहि १४ विन सेठौर से हरै कौआगे होइ
नहोइ नाइ सखीन से हरमै अनसयान
है सोइ १५ नवनाइ काभेद त्रोषितपति
का विरहनी आंति रिसपतिसो होइ पुन
पाछै पछितायमनकलहंत रितासोइ
१६ पति आवैकहुरैनवसै घात षंडिता
गेह आनिमिलत अभिसारिकाकरि
सिंगारही देह ७ पियसेहरपायानहि
चिंतामनमै आनि सोच करै संतापसो
उतकंठता वषानि १८ विनु पायेसंके
तापिय विप्रलब्ध तन वाध वासकसज्ञा तापि
तन सजै पिय आवन जियधाय १९
जाको पिय आधीन कहि स्वाधिनप

तिकाताहि भोरसुनैपियकोगमनुप्रवत्स्य
तपत्निकाआहि २० रूपप्रेमअभिमानसे
क्षिविधिगर्वताजानि अन्यसंभोगदूषिता
आनिमिलनपियमानि २१ गोपका
पिधीराधीरैप्रगटअधीरकोप लछैनधी
रअधीरकोकोपप्रगटअरुगोप २२ स
हजेहासीषेलमैविनयपवनसुनिका
न पायपरैपियकोमिटैलघुमध्यमगु
रुमान २३ स्तंबकंपवैवर्णस्वरभंग
अश्रुअरुस्वेद पुलकरिपुलकिअरुनील
ताआठौसात्विकभेद २४ हावसंयो
गसिंगारमेदंपतिकेतनभाव चेष्टा
जेवहुभातिकीतेकहियेदसहाव २५
पियप्यारीरतिसुखकरैलीलाहावव
षान बोलिसकेनहिलाजकेविहति
सुहाववषान २६ चितवनिबोलनि
चालमैरसकीरीतिविलास सो

हतभूषनअंगमेंलजितहावप्रकास २७ वि
छिनकाहवेरमैंभूषनअलपसुहाइ रसमों
भूषनमूलिकेपहिर विभ्रमहाव २८ क्रोध
हसअभिलाषभयकिलिकिंचितमैहोइ
प्रगटकैदुषसुषसवेहावकुट्टमितहोइ२९
मोटाइतचाहेंदरसवातनभावतकान
आयेआदरनाकरेधारिविवोकगुमान
३० अथविरहअवस्था नैनमिलेमनहूमि
लेमिलवेकोअभिलाष चिंताजानमवि
नमिलेजतनकियेहूलाष ३१ सुमिरनर
स संजोगकोकरिकिमहाउसास कर
तिरहतिपियगुनकथनमन उद्वेगप्रका
स ३२ विछुसमरेकछुवकउठेकहिपि
ताहिप्रलाप देहघरतमनमेबढतविर
हव्याधिसताप ३३ पियमूरतिमूरतिभ
ई जडतासवगात सोकहिमेउनमादव
सनिदिननिसिदिनजात ३४ नवरस ग
नि सिंगारहिसुहास्यारसकरुनारोद्रहि
मान वीरभयरुविभत्सकहिअद्भुतसांतव

घो

थान ३५ स्थाईभाव रतिहासोत्रससोक
पुनि क्रोधउछाहरूभीति निद्राविस्मय आ
ठयेस्थाईभावघ्रतीति ३६ अथविभावानु
भावाद्दीपनं जोरसकीदीपतिकरै उद्दीपन
है सोइ सो अनुभावजुउपजिहै रसको अनु
भवहोइ ३७ आलंबन आलंबिरसजामैं र
हेथनाव नौहूरसमैंसंचरैतेविभचारीभाव
३८ अथविभचारीभाव निर्वदग्लानिसं
कागरवचिंतामोह विषाद दैन्यअसूया
स्मृतिमदआलसस्रमउनमाद ३९ व्रीडा
जडनाहर्षधृतिमतिआवेसवघानि आकृ
तिगोपनचपलताअपसंमारभयजा नि
४० उतकंठानिद्रास्वपनबोधउग्रताभाइ
व्याधिविषादवितर्कमतिअंततीसगनाइ
४१ अथअलंकार अलंकारसामान्यअ
रु केहविसिष्टप्रकार सब्दअर्थतेजानिये
दोहूनकोव्यवहार ४२ अथवेहसामान्य
तेराजभूमिपरसंग तातेकछुसंछेपतेकहि
तंविसिस्टकेअंग ४३ अथोपमा

वाचकधर्मअरुवर्ननीअरुचौथेउपमा
न ए चारोंपैये जहांपूरण उपमाजान
५५ जिहिविधिसवसमेता मिलैसोइ उप
माजान ससिसाउज्जलतियवदनपल्ल
वसम्दुपान ५६ लुप्तोपमा वाचकधर्म
अरुवर्ननियअरुचौथेउपमान इकविन
द्वैविनुतीनविनुलुप्तोपमासुजान ५६
विज्जुरीसीपंकजमुषीकनकलतातिय
तेय बनितारसश्रृंगारकीकारनिभूर
तियेय ५७ रसनोपमा पहिलेजोउपमे
यहेफिरियांछेउपमान नैनमीनसेच
पलहैनैननिसोमनजान ५८ अथान
न्वय उपमेईउपमानजवकहतअन
न्वयताहि तेरेमुषकेजोरकोतेरोहेमु
षआहि ५९ अथोपमेयोपमा उ
पमालागेपरस्परसोउपमानुपमेय
यंजनहेतुवनैनसेमुव दृगाघंजनसेय
६० पेचविधिप्रतीप सोप्रतीमउप
मेयकोकीजेजवउपमान लोचन
से अंवुजवनेमुषसोचंदवषान ६१

उपमेयकोंउपमानतेआदरजवैनहोइ गरव
करतिमुषकोकहाचंदहिनीकोमोइ ५२ अन
आदरउपमेयतेजवपावेउपमान तीछनती
९ यकटाछतेमंदकामकेबान ५३ उपमेयकों
उपमानजवसमतालाइकनाहिं अतिउतम
दृगमीनसेकहेकोनविधिजाहि ५४ व्यर्थहो
इउपमानजववर्णनीयलषिसार छगआगे
मृगकछुनाएपंचप्रतीपप्रकार ५५ अथवि
विधिरूपकालंकार हैरूपकहैभांतिके मिलि
तद्रूपअभेद आधकन्यूनसमदहुनिकोनी
नतीनएभेद ५६ मुषससिवा[illegible] सितअ
धिकउदितजो[illegible] दिनराति सो[illegible] तउपजीन
यहकमलाअपरमुहात ५७ नैनकमल
एअैनहैओरकमलकि[illegible] गमनकर
तनीकोलगतकनककंतायहवाम ५८ औ
तिसोहतविद्रुमअधर नहिंसमुद्रउतपन्न
तुवमुषपंकजविमलतासरसमुवासप्र
सन्न ५९ अथपरिनामालंकार करैहस्प
उपमानले[illegible] वर्णनीयपर[illegible]ाम लोचनकंज
विलाससेदेषोदेषतिवाम ६० द्विविधिश्ले
ष सोउश्लेषनिएककेबहु[illegible]हुरीत

अथोासुरतरु तियमदनअरिकोकामअली
ति ६१ बहुविधिवरनैएककोबहुगुनसोंउल्ले
ख नृपअर्जुनतेजरविसुरगुरुवचनविसेष
६२ अथस्मरणभ्रमसंदेह सुमिरणभ्रम
संदेहएलछननामप्रकास सुधिआवतवा
वदनकीदेषेसुधानिवास ६३ वदनसुधा
निधिजानियेतोसंगफिरैचकोर वदनकि
धौयहसीतकरकिधौकमलभैभोर ६४
सुधापह्नुति धर्मदुरैआरोपतसुधापह्नु
तिहमान उरपरनाहिउरोजएकनकलता
फलमान ६५ धर्मदुरावैजुक्तिसोंहेतुअप
ह्नुतिमान नविचंदनहिंहैनरविवडवानल
हियआन ६६ पर्यस्तापह्नुति पर्यस्ता
गुनएककोऔरविषेआरोप होंहुसु
धाधरिनाहिंयहुवदनसुधाधरआप ६७
भ्रान्त्यापह्नुति भ्रान्त्यापह्नुतिवचनसोंभ्र
मजवपरकोजाय तापकंपहैज्वरकहास
खीमिनतयआय ६८ छेकापह्नुति छेका
पह्नुतिजुक्तिकोपरसोंबातदुराइ करतया
धरक्षतनाहिनहिंसषीसीतरितुवाइ ६९

कैतवापह्नुति कैतवापह्नुतिसकको मिसुकरि
५ वैननआगि तीछनतीयकुटाछ मिसु वरसतम
नमथवान ७० उत्प्रेक्षालंकार उत्प्रेक्षासंभा
वनावस्तुहेतफललेषि नैनमनोअस विंदहै
सरसविलासविसेष ७१ मनोचलीआगान
कठिनतातिरातपाय तुवपदसमताकोवृष
लजलसेवतइकपाय ७२ अक्रमातिसयो
क्ति अतिसयोक्ति अक्रमजहाकारनकार
जसंग तोसरलागतसाथहीधनुषीहिआरि
केअंग ७३ रूपकातिसयोक्ति अतिसयो
क्ति रूपकजहांकेवलहीउपमान कनक
लतापरचंद्रमाधरंधनबहवान ७४ अ
तिपह्नुवरूपकातिसयोक्ति अतिपह्नु
गुणाओरकोओरेपरठहराइ सुधाभयो
यहवदनतुवचंदकहेववराइ ७५ भेदका
तिसयोक्ति भेदकातिसयोक्ति कहिओ
रैपदसरसात ओरैहसिवोदेषिवोओरया
कीबात ७६ संबंधातिसयोक्ति संबधाति
सयोक्तिजहदेनअयोगहियोग यावके
मंदिरकेहेससितऊंचेतोग ७७ अनि

सयोक्ति अतिसयोक्ति दूजीवैहे नोगुआ
नोगवखान नोकरआगेकलपतरूकौ
पावैउपमान ७८ चपलातिसयोक्ति चप
लाभुक्ति जहहेतुकेहोतनामहीकाज कंक
नहीभईमूंदरीपीयगमनसुनिआजि ७९
अत्यंतातिसयोक्ति अत्यंतातिसयोक्तिसो
पूरवपरक्रमनाहिं बाननिपहुचैआगलोआ
रिपहिलेगिरिजाहिं ८० त्रिविधितुल्यये
गिता तुल्ययोगितातीनएलछनक्रमतेजा
नि १क थारमेहितुअहितुबहमेएकावा
नि ८१ बहुसोसमतागुननिकरि२हविधि
भिन्नप्रकार गुननिधनीकेदवनूतियको
अरिकोहार ८२ नवलबधूकीवदनदुति
अरूसुकचितअरविंद तूहीश्रीनिधिधर्म
निधितूहीइंदुरूचंद ८३ अथदीपक सो
दीपकनिजुगुननिसोवर्ण्यइतरइकभाइ
गजमदसोनृपतेजसोसोभालहतवनाइ
८४ त्रिविधिदीपकावृत्ति दीपकआवृत्ति
तीनविधिआवृत्तिपदकीहोइ पुनिआ

६

वृति अर्थकी दुजीक हियेसोइ ८५ पद
अरु अर्थदुहू निकी आ६ श्री ज्ञी लखि
घनवरषो है री सुधी नि सिवरषो है दवि
८६ फूलेवृक्षक देवके कुरवक विकसेआ
मन्नभयेहु भोरअरु बातकमन्नसरा ८७
प्रतिवस्तूपमा प्रतिवस्तूपमा सो समभदो
ऊ वाक्य समान सोभासूरप्रतापबरसो
भासूरहिवान ८८ त्रिविधिनिदर्शनि
कहिये त्रिविधि निदर्शना वाक्यअर्थ
समदोइ एककिये पुनि औरगुनऔर
वस्तुमहोइ ८९ कहियेकाम्जरे विकट
भलोबुराफलभाव दाता सौम्य कलंक
बिनुपूरनचंदवनाव ९० देखो सहज हि
धरत एपे जनलीलानिन तेजस्वी सो निव
लमहोदेवअरुमेव ९१ अथविति रेक
सोविति रेकउपमानतें उपमे तिअधिको
लेषि मुषहैअंवजुसो मधी मीठी बात
विसेष ९२ उपमा अधिक विति रेक उप
माधिक विति रेकको कहत कवि जनपर
पंजन हे तुवनेन स दा अंजनरंच ९३

मम समविविरिको मुहिं ढको अपाप्रुत
मलीन भेद गुन पग्ह सागको आक
र हिमे कीन ९४ सहोक्ति सोसहोक्तिसव
साथही बरनें रससरसाद कीरतिअरुकुल
साथही जलनिधिपुहुवीजाइ ९५ द्विविध
विनोक्ति है विनोक्ति इम तिको प्रस्तुत विन
कछु छीन अरु सोभा अधकी लेरु प्रस्तुतिक
छु इक हीन ९६ दृगषंजन से कंजसे अंजन
विन सोभे न वलि सवगुन मरक्षात तूरच
रु षाइ नेन ९७ दृष्टांत अलंकार दृष्टांत
तसोलक्षन नाम प्रमान कांतिवान सु ससि
ही वन्यो ... कीरतिवान ९८ समासो
क्ति समासोक्ति प्रस्तुत फुरे अप्रस्तुति वर्न
न माग्ह कुमुदिन हूं प्रफलित भइ देषि क
लानिधि साम ९९ परिकुरांकुर साभि
प्राय विसेष्यजनव परिकर अंकुरनाम सुधे
स्व विषके कहे नेक न मानत वाम १०० त्रिविध
... त्रिविध उदात सो बनेये वस्तनको संभार
स्कृति को जहं आगे कहे अरु जितक थो उदार १०१

जरीबाफझालरमुकुतराजेउपरबितान नग
१ नगटितकुरसीलसेलजितहोतमघवान १०२
वहवंसीसंकेतवटवहेघाटविसरात जरा
रासरंगकरतेहैगोपिनसोंबहुभात १०३
जबजबबनकुसदानहितकरराघतेश्याम
तवतवचलभलपरतहेहरिहूधनपति
धाम १०४ परिकरहेपरिकरिआसय
लियेजहोविसेषणहोइ ससिवदनीयह
श्लेष नायकातापहरतिहेसोइ १०५ हैश्लेषज
श्लेषअलंकृतअर्थबहुएकशब्दमेंहोत
सो होइनपूरनहेहिमुऐसेवदनउदोत १०६
अप्रस्तुतिप्रसंसा अलंकारहूभाषिये
अप्रस्तुतिपरसंस इककवरनतप्रस्तुति
बिनाहूजेप्रस्तुतिअस १०७ धनयहचर
चाण्यानकीसकलसभसुखद विषरा
घतहेकंठपूरावआपधरोइहेहत १०८
प्रस्तुताकुर प्रस्तुतअंकुरहेकियेअ
प्रस्तुतनभेप्रस्ताव कहागयाअलिके
वेछांडिसुकोमलंजाय १०९ द्विवि

धिप्रज्ञायोक्ति पराजायोक्तिप्रकारहैकछु
रचनासोवात मिसुकरिकारजकीजयेज
सेचितहिसुहात ११० चतुरवहैजातुवा
गरेविनुगुनडारीमाल तुमदोऊवैठहुहां
जातअन्हावनताल १११ व्याजस्तुति व्या
जस्तुतिनिंदामिसहिजवेबडाईहोइ स्वर्ग
चढायेपतितलेगंगकहाकहैतोहि ११२
त्रिविधाछेप तीनभांतिआछेपपहलेक
निषेधाभास पहिलेकहियेआपकछु
बहुरिफेरियेतासु ११३ दुरेनिषेदजुवि
धिवचनलछनतीनालेषि हैनहिदूजोअ
उनितियतनतापविसेषि ११४ सीतकि
रनिददरसतुअथवातियमुषआहि जाहु
दइभोजनमदेचलेदसतुमआहि ११५ जा
व्याजनिंदा व्याजनिंदहैस्तुतिविषेनिंदा
औरहोइ साधुसाधुसषिमोलियेसहद
तनषदोइ ११६ व्याजानिंदनिंदाविषे

८

औरै निदाहोइ सदाछीनकीनोनतूचंद
मदहेसोइ ११७ विरोधाभास भासैज
वैविरोधसोयहै विरोधाभास उतरतही
उतरतनहीउरतखानिवास ११८ अथ
विभावना होतछभांति विभावनाकार
नविनहींकाज विनजावककीजैचरनअ
रुनलखैहैआज ११९ हेतुअपूरनतेजवै
कारजपूरनहोइ कुसुमवानकरगहिम
दनसबजगजीत्योजोइ १२० प्रतिबंध
केहोतहीकारजपूरनमानि ।नैस
दिनअकृतिसंगततऊनैनरागकीखानि
१२१ जवैअकारनवस्तुतेकारजप्रग
टितहोत कोकिलकीवानीअवेवोल
तमुन्याकपोत १२२ काहूकारनतेजवे
कारजहोतविरुद्ध करतमोहसंतापयह
ससीसीतकरिसुद्ध १२३ पुनिकछुक
।जतेजवैकारनउपजतरूप नेनमीनतेदे
षतसरितावहअनूप १२४ विविधविसे
षोक्ति ।विसेषोक्तिजोहोतसोकारनठपे

नाहि

नाहि नेहघटत नहियेजरि कामदीप चितमाहि १२७ असंभवा कहेअसं भवहोतजवविन संभावनकाज गिरिवर धरिहै गोपसुत कोजानैयहआज १२८ त्रि विधिअसंगति तीनअसंगतिकाजअरु कारनन्यारठाम ओरठौरहीकीजयेओरु ठौरकोकाम १२९ ओरकाजआरंभिये ओ रकीजियेदोर कोयलमदमातीभई झूम वअंवाबोर १२८ तेअरिकाअंगिनाति लकलगायोपानि मोह मिटायोनाहिप्रभु मोहलगायोआनि १२९ त्रिविधिविषम विषमअलंकृततीन विधिअनमिलतेको संग कारनकोरंगओरहै कारजओररंग १३० ओरभलोउद्यमकियेहोतबुराफल आय अतिकोमलजननीयकोकहांका मकीलाय १३१ षडगलताअतिस्यामतउ पजीकीरतिसेत सविलायोघनसारतेअधि कतापतनदेत १३२ त्रिविधसम अलंका रसमतीनविधि यथायोगकोसंग को उजमेसवपाइयेकारनहेकोअंग १३३

श्रमविनुकारजसिद्धजवउद्दिमकरतेहोइ
हारवासतियउरकेमेश्रपनेलाइकजोइ १२८
नीचसंगअचरजनहीलछमीजसजाश्राहि
जसकोउद्दिमहौकियानीकेपायातुहि १२९
विचित्र इछाफलविपरीतकोकीजेवच
नविचित्रनवतउद्दतालहनकोनेहपुस
पचवित्र १२६ द्वितिधिअधिक अधिका
ईआधेयकीजवअधारसौहोइ जेआधा
रआधेयतेअधिकअधिकएदोइ १२७
सातदीपनवखंडमेकीरतिनाहिसमाति ह
दसिंधुकेतोजहांतुवगुनवरन्योजाति १३०
अलपालंकारअलपअलपआधेयतेअति
सूछमआधार अंगुरीकीमुंदरीहुतीभुजमे
करतेविहार १२९ अन्योन्या अन्योन्यालंका
रहैअन्योअन्यउपकार ससिसोंनिसिनीकीलगे
निसिहीमेससिसार १४० त्रिविधिविसेष तीनअ
कारविसेषहैअनअधारअधेय घोरोजवका
हंभकछुअधिक सिद्धिकोदेय १४१

श्री
वृक्ष एककौ जय वर्नन होर अनेक न भऊपर
क चनलता कुसुम सू छे है एक १५२ कल्पवृक्ष
देघौ सहीता कौ देखत नैनन अंतर बाहर दिसि
विदिसि वे हेतिया सुषदेन १५३ व्याघात व्या
घात जै और तकौ जे कार अोर वकुरा विरधीतिज
वे कार जलाइ पे ठार १५४ सुष पावत जासौं जग
त तासौं मारत मार निहचै जानत बालतो करत
का हपरहार १५५ गुंफालंकार कहियै गुंफ परं
परा कारन काज वहोत नीतिहि धन तिहि त्या
ग पुन ता तेजस उद्दोत १५६ एकावली कँहितम
कि परीति यह एकावली वषान दृगस्रुति पे
स्रुति बांह पर बांह जंघ लौ जान १५७ माला दी
पक दीपक एकावलि मिलत माला दीपक नाम
काम धाम तिय हिय भयो तिय हिय को तू धाम १५८
सारालंकार एक एक ते सरस जहं अलंकार य
ह सार मधु सो मधुरा है सुधा कविता मधुर अपा
र १५९ यथासंख्य यथासंख्य सो जानिये
वस्तु अनुक्रम संग करि अरि मित्र विपत्त को
गंजन रंजन भंग १६० द्विविध पर्यायी है पर्याय

अनेककोंक्रमसोंआश्रयएक फिरिक्रमसैं
नवएक पुनिआश्रैधरैअनेक १५२ हुतीतरलता
१० चरनमेंभईमंदताआय अंबुजतजितियवदन
दुतिचंदहिंहीसमाय १५३ परिवृत परिवृतली
६ जैअधिकयहथोरदैकछुवैदै अरिंदुदराकय
छतिपयकवानदैलेइ १५४ परिसंख्या परिसं
ख्याइकथलवरजिदूजेथलठहराइ नेहहानहि
यमैनहीभईदीपतनजाइ १५५ द्विविधसमुच्चय
दोसमुच्चयभाववहुकछुउपजैइकसंग एकका
जचाहितकयोकैअनेकइकसंग १५६ तुवआ
रिभाजनगिरतफिरिभाजतहैसतराय जोवन
वियामदनधनमदउपजावतआय १५७ विक
ल्प हैविकल्पयहकैवहैयहविधिकोवृतांत
कविहैदूषकोअंतयहजमकैप्यारोकंत १५८
कारकदीपककारकदीपकएकमैक्रमसोंभा
वअनेक नातचितैआवतहसितपूछतवात
विवेक १५९ समाधि सोसमाधिकारजसुभ
गओरहेतमिलिहोत उतकंठातियकाभईआ
थजोदिनउद्दोत १६० प्रत्यनीक प्रत्यनीक

सोभवलरिपुताहिनसौंकीरजोर नैनसमीप
श्रूनपरकंजचढ्योकहिदोर १६० काव्यार्थी
पति काव्यार्थापतिकोकहापदजुतवरनतजा
त भुषजीत्योवाचंदसोकहाकतकनीहोइ १६१ कहाकमलु
काव्यलिंग काव्यलिंगजवजुक्तिसोंअर्थस
मर्थनहिहोइ ताकोंमैजीत्योमदनमोहियमे
पिवजोइ १६२ अर्थांतरन्यास सामान्यतवि
सेषदृढतवअर्थांतरन्यास रघुवरकेवरगिरि
तरेवडकरैनकहास १६३ विकस्वर विकसर
होतविसेषजवफिरसामान्यविसेष हरिगि
रिधार्योसतपुरुषभारसहैजोसेस १६४ प्रौढो
क्ति प्रौढउक्तिवर्ननविषैअधिकाईअधिकार
कसअमावसरैनघनसघनतिमरकतार १६५
संभावना जोयोंतोयोंहोतहैसंभावनाविचार
वकतांहोतासेषसोतोलहितोगुनपार १६६
मिथ्यापिवसति झूठकेहितझूठकहिमिथ्या
ध्यवसितरीति करमेंपारदजोरहैकरनवाल
प्रीति १६७ ललित ललितकह्योकछुचाहिये
ताहीकोप्रतिविंव सेतवांधकरिहैकहाअव

११ तोगुतयोग्रंव १६७ त्रिविधिग्रहर्षण। तीन
प्रहर्षणजतनविनु वांछतिफलजोहोइ वां
छित हूतेअधिकफल स्रमविनलहियेसोइ १६८
सोधतजाकेजननकोवस्तुचढैकरसोइ जा
कोचितचाहितहुतोआइ इतीहोइ १६९ दी
पककोउद्दमकियेतोलगिउदियाभान नि
धिअंजनकीओषधीसोधतलिया निधान १७०
करंण। विषाद सोविषाद चितचाहने उलटोह्वैकछु
जाइ नींवीपरसतसखीतिपर कुछुटयुध्वनि
आइ १७१ उल्लास गुनऔगुनजवएकतेऔ
रधरेउल्लास ह्वायसंतपावनकरेगंगधरेज
हआस १७२ अवज्ञा होतअवज्ञाऔरकेन
लगेगुनअरुदोष परससुधाकरकिरनतमूं
नपंकजकोस १७३ अनुज्ञा होतअनुज्ञादो
सकोजीजेजवगुनमान होहिविपतिजामेसदा
हियेवढतहरिध्यान १७४ रत्नावलि रत्नाव
लिप्रस्तुतअरथक्रमतेऔरेनाम रसिकवं
तुरमुखभूमिपतिसकलदान कोधाम १७५

लेषा गुनमैंदोषरू दोषमैगुनकलपनासुलेषि
सुकि यह मधुरीवानीवं धनलह्योविसेष १७५
मुद्रा मुद्राप्रस्तुतपदवियेऔरअर्थपरकास अ
लीजाइकिनिपियऊजहारसीलीवास १७७
तदगुण तद्गुणतजिगुणआपणोसंगतको
गुणलेइ वेसरमोतीअधरमिलिपदमरागछवि
देइ १७८ पूर्वरूप पूर्वरूपजवसंगगुनतजिफि
रि अपनेलेत दूजेगुनजवनामिटैकियेमिटनि
केहेत १७९ सेषस्यामह्वोसिवगरेतुवजसउज्जल
होत दीपमिरायेहीकियोरसनामणउद्दोत १८०
अतद्गुण अतद्गुणसंगतिभयेजवगुणल
गतिनाहि पियअनुरागीताभयेवसिरागामन
माहि १८१ अनुगुण अनुगुणसंगतितेजवै
पूरवगुणसरसाइ मुक्तमालहियहासतेअधि
कस्वेतह्वैजाइ १८२ उपमाअरुउपमेइकोजहा
होइअहरान मिलितेऔसामान्यकोयहभेदप
हचान १८३ सामान्य सामान्यसुसादृष्य
तेजानिपरैनविसेष नाहिंफरकश्रुतिकमल
अरुतियलोयनअनिसेष १८४ मीलित

१२

मीलितसोसाहृष्यतेभेदनजबैनलषाइ अरून
वरनतियवरनपरजावकौलष्योनुजाइ १८५ उ
नमीलित उनमीलितसाहृस्यतभेदफुरैनवमा
न कीरतिआगेतुहिनगिरिछुयेपरतहजान १८६
विसेष हैविसेषविसेषपुनफुरैजुसमनामाभा
तियमुषअरूपंकजलषससीदरसतेसाभ १८७
गुंफोतर गुंफोतरकछुभावतेउत्तरदीनेहोत उ
नवेननिमेपथिकसुनिउतरनलाइकसोत १८८
चित्र चित्रप्रश्नउत्तरदुहुएकवचनमेहोइ मुग
धातियकीकलसुनिकौनभौनमेहोइ १८९ सू
छम सूछमपरआसयलषेसेननिमेकछुभाइ
देषीविहसीसीसमनिकेसनिलईछुपाइ १९०
पिहित पिहितछपीपरवातकौज्ञानदिषावैभाइ
प्रातहिआयेसेजपियहसदावतेहैपाइ १९१ व्या
जोक्ति व्याजउक्तिदूहिविधिकहेदुरैजाइआकार
ससिसुकीनेकमेपमानकजानअनार १९२
गुढोक्ति गूढउक्तिमिसऔरकेकीजेपरउपदेस
कालसषीहौजाउगीपूजनदेवमहेस १९३
विधोक्ति श्लेषछयापरनटकैविधाकतिरै

अैन पूजनदेवमारेसकौंक हितदिषावतसेन १९४
युक्ति यहेजुक्तिकीनीक्रियाअर्थछपायेजार
पियाचलतआसूंचलेयोंछतिनैननंभार १९५
लोकोक्ति लोकोकतिकछुवचनमेंलीनेलोकअ
वाद नैनमूदषटमासलौसषिहोविरहविषाद १९६
छेकोक्ति लोकोकतिकछुअर्थसोंसोछेकोक
तिमान जोगायनकोफेरहताहिधनंजयपुजान
१९७ वक्रोक्ति वक्रोकतिसुरश्लेषसौंअर्थफेर
जवहोइ रसिकअपूरवहैप्रियाबुराकहितनहिको
१९८ सुभावोक्ति सुभावोक्तियहजानियेवर्नन
जातसुभाव हसिहसिफिरदेषतिदुकतिमुहमोर
तड़तराइ १९९ भाविक भाविकभूतभविष्यजो
परतिषहोइवनाव वृंदावनमैंआजवहलीलादे
षीजाइ २०० उदात्त उपलछनदैसोधियेअधि
कारीसुउदात्त तुमजाकेवसहोतहोसुनेतनक
सीवात २०१ अत्युक्ति अलंकारअत्युक्तियहव
र्ननअतसयरूप जाचकतेदानतभयेकल्पतरू
भूप २०२ निरुक्ति सोनिरुक्तिजवजोगतेअर्थक
ल्पनामान ऊधोकुवजावसभयेनिरगुणवहे
निदान २०३ प्रतिषेध सोप्रतिषेधप्रसिद्ध

१२

जोअर्थनिषेधोजाइ मोहनकरमुरलीनहोइ

छूयेवडीवलाइ २४ विधि अलंकारविधिसि

द्धिजोअर्थसाधियेफेरि कोकिलहैकोकिलअ

वैरितुमेकरिहैटरि २५ हेतु हेतुअलंकृतहोइ

जबकारनकारजसंग कारनकारजयेजबै

वस्तुएकहीअंग २६ उदितभयोससिमान

नीमानमिटावनमानि मेरेरिद्धसमर्थयहते

रीरूपाववखान २७ इत्यर्थअलंकार अथ

शब्दालंकार छेकानुप्रास आवृतिवरनअ

नेककीदोइदोइजवहोइ हैछेकाअनुप्राससो

समताविनुहसोइ १ अंजनलाग्योहैअधिर

प्यारेनैननिपीके मुकतमालफगटिअगटकरे

नहियेमनलीके २ लाटानुप्रास सोलाटानु

प्रासजवपदकीआवृतिहोइ पास्अर्थकेभेदसों

भेदविनाहुसोइ ३ पीयनिकटजाकेनहीधाम

चंदनीताहि पीयनिकटजाकेसखीघामचां

नीआहि ४ जमक एकशब्दकोफेरिकेअर्थ

नयरेनगुदीसोजान सीतलचंदनिचन्द्र हिअधि

कअग्नितमान १ त्रिविधिवृत्तानुप्रास अ

वृत्ति

तिअ अछर आवृति बहु विधि तीन विधिमान
मधुर वरन जामें सबै उपनागरिका जान ६
दूजै परुषा कहत है जामें बहुत समास । विनु
सुवास विनु मधुरता कहत कोमला तासु ७
अनना हिं संदेस कोकिल चातक भृंगकुल
केकी कठिन चकोर सोरसुन्यो धरक्यो हियो
कोमल कटि कच अति जोर ९ घन वरसे दामिनि
लसै दिसि दिसि नीर तरंग दंपति हियें हुलास
सों सवै सरस अनंग १० इत्य सब्दार्थालंकार
अलंकार सब्द अर्थ के कहे तीन सो साठ करे
प्रगट भाषा विषै देषि ससंस्कृत पाठ ११ ताहि
नर के हेतु पद की नो ग्रंथ नवीन जे पंडित भाषा
निपुनि कविता विषै प्रवीन १२ लछन तिय अरु
पुरुष के हाव भाव रस धाम अलंकार संजो
गते भाषाभूषन नाम १३ भाषाभूषन ग्रंथ
को जो देखै चितलाइ विविध अर्थ साहित सर
स सम्झै सबै बनाइ १४ इति श्रीराजा जसवंत
सिंह कृत भाषाभूषण संपूर्ण । लिषतं रुद्रसैन
ब्रह्मो आतमहेत वे शुभमस्तु सं० ८२२ पोस ९
वदि स्यालकोट

अति कारी भारी घटा प्यारी वारी वेस
निदपरदेस अरे सराह आवन नाहि संदेस ८

१८

श्री श्रीगणेशायनमः श्रीगुरुभ्यो

भ्रातः सम भ्रातः सम

सत्यानृता च परुषा प्रियवादिनी च हिं

स्रा दयालुरपि चार्थपरा वदान्या

म

1